



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

गौरैया द्वितीय संस्करण



महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय रेलवे वाणिज्यिक
4, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली -110002

कलाकार की अभिव्यक्ति

गौरैया सभी संस्कृतियों में गहरा महत्व रखती है और विभिन्न विषयों का प्रतीक है। मेरी कलाकृति में, कुल मिलाकर गौरैया की तीन मुद्राएँ हैं जो स्वतंत्रता, आशा और दृढ़ संकल्प की कहानी को दर्शाती हैं, जो गौरैया पत्रिका के कवर के लिए एक दृश्य कहानी बनाती हैं।

गौरैया पत्रिका के मुख्य व अंतिम प्रष्ठ के लिए कलाकृति सुश्री तन्वी बंसल पुत्री सुश्री चित्रा बंसल वरिष्ठ निजी सचिव (महानिदेशक) द्वारा बनाई गई है।



गौरैया

(द्वितीय संस्करण)

(रेलवे वाणिज्यिक लेखापरीक्षा पत्रिका)

द्वितीय अंक

विभागीय वार्षिक गृह-पत्रिका, वर्ष 2024

पत्रिका – परिवार

मुख्य संरक्षक

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी, महानिदेशक

संरक्षक

श्री गुरप्रीत वालिया, निदेशक

संपादक मंडल

सुश्री शैली गुप्ता, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री उदयराज यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री नितेश लाठर, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

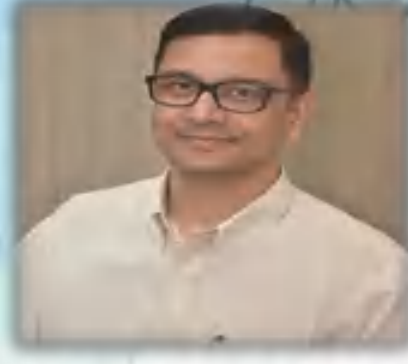
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय रेलवे वाणिज्यिक

4, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली -110002

अनुक्रमणिका

क्रमांक संख्या	रचना	रचना की प्रकृति	रचनाकार का नाम	पृष्ठ संख्या
1	महानिदेशक की कलम से	विचार	डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी महानिदेशक	6
2	निदेशक की ओर से	विचार	श्री गुरप्रीत वालिया, निदेशक	7
3	एक संदेश हम सभी के नाम.....	लेख	डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी महानिदेशक	8-13
4	कार्यालय स्वास्थ्य और विवेकानंद कार्यस्थल तनाव से कैसे निपटें	लेख	श्री तिलक राज , वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	14-16
5	मेरी बेटियाँ	कविता	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	18
6	21 वीं सदी में हिन्दी	लेख	श्री नितेश लाठर, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	19
7	नई राह बना ले	कविता	श्री प्रवीण कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	20
8	अतीत के अखबार उठाले	कविता	श्री उदयराज यादव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	21-22
9	ज़िंदगी	कविता	श्री विशाल भाटी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	23
10	शहीद की पत्नी	कविता	श्री नीरज तहलान, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	25
11	गिरना भी अच्छा है	कविता	श्री सुमित कुमार , डी. ई. ओ	26
12	ये तेरा जीवन सफ़र	कविता	श्री योगेश , वरिष्ठ लेखापरीक्षक	28
13	इतिहास की परीक्षा	संस्मरण	सुश्री नीलम मलिक, पूर्व वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	29
14	बच्चों के लिए लघु कथाएँ भाग 1 (ज़िन्दगी एक प्रतिध्वनि है)	कहानी	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	30
15	भाग 2 स्वच्छता में ईश्वर बसता है	कहानी	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31

16	'सोच बदलो बेटे बदलो' या 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'	लेख	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	33
17	दहेज प्रथा	लेख	श्री नईम अहमद, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	35
18	जीवन और मृत्यु	कविता	सुश्री प्रीति पराशर, लेखापरीक्षक	36-37
19	भारत की माटी	कविता	सुश्री ईशा वर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	38
20	अजय – भारत	कविता	सुश्री ईशा वर्मा, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	39
21	मेरा बाप कम नहीं मेरी माँ से	कविता	श्री मुकेश कुमार, पूर्व आउटसोर्सिंग स्टाफ	40
22	निंदा एक मीठा जहर	लेख	श्री अनुराग शुक्ला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	41
23	एहसास	कविता	सुश्री कामना वर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	42
24	आओ चले एक ऐसे जहाँ में	कविता	श्री सूरज मलिक, लेखापरीक्षक	43
25	खिड़की पर मेरे...	कविता	सुश्री लवली कुमारी अर्धांगिनी: श्री बन्दन कुमार, पूर्व कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	44
26	महँगी धूप	लघुकथा	सुश्री लवली कुमारी अर्धांगिनी: श्री बन्दन कुमार, पूर्व कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक	45-46
27	अतरंगी कार्यालय	कविता	श्री निखिल देव बजाज, लेखाकार	47-48
28	याद आती है के नही...?	कविता	श्री निखिल देव बजाज, लेखाकार	49-50



महानिदेशक की कलम से....

मुझे कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'गौरैया' का द्वितीय संस्करण आपके साथ साझा करते हुए उल्लास एवं गर्व का अनुभव हो रहा है। यह इस कार्यालय का पहला ई-संस्करण है।

हर भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। यह आवश्यक है कि राजभाषा संबंधी प्रावधानों का अनुपालन पूरी ईमानदारी से किया जाए तथा सभी अधिकारी एवं कर्मचारी हिंदी पढ़ने, बोलने व लिखने में प्रतिष्ठा व सम्मान महसूस करें।

यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी को बढ़ाने की दिशा में केवल एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रयास ही नहीं बल्कि इस संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों की भावनाओं को एक सम्मानित मंच प्रदान करती है जिसके माध्यम से वे अपनी अभिव्यक्ति स्वतंत्र एवं प्रभावशाली ढंग से कर पाने में सक्षम होते हैं।

अतः गौरैया पत्रिका के द्वितीय संस्करण में योगदान देने वाले कार्यालय के सदस्य एवं उनके परिवार जनों को मेरा अभिनंदन तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएं।

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी

महानिदेशक



निदेशक की ओर से....



मुझे गर्व हो रहा है कि हमारे राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कार्यालय की तरफ से हमारी हिंदी गृह-पत्रिका, गौरैया, अपने दूसरे अंक के लिए तैयार है। आपके समक्ष इसे प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत अधिक प्रसन्नता हो रही है।

इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह एवं लगाव को प्रोत्साहित करना है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के लिए किये गए प्रयास आशापूर्ण परिणाम लायेंगे और सरकारी कार्यवहन में राजभाषा का अधिकाधिक प्रयोग प्रचार प्रसार एवं प्रोत्साहन के लिए यह गृहपत्रिका योगदान देगी।

सभी लेखकों के विचारों को समेकित कर इसे पठनीय और रोचक बनाने के साथ-साथ इसे ज्ञानवर्धक बनाने का भरपूर प्रयास किया है। इस पत्रिका को और बेहतर बनाने हेतु हमें आपके सुझावों और सहयोग की सदैव अपेक्षा रहेगी, ताकि हम इसे आपकी अपेक्षाओं के अनुरूप बना सकें।

हमें यकीन है कि आपको इस विषय-संग्रह का आनंद आएगा और आप इसे पढ़कर जो ज्ञान प्राप्त होगा उसे अपने आस-पास के लोगों के साथ साझा करेंगे।

श्री गुरप्रीत वालिया
निदेशक

एक संदेश हम सभी के नाम.....

डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी
महानिदेशक



मेरा मानना है कि आज हम सब जो भी हैं, अपने आध्यात्मिक, व्यक्तिगत, सामाजिक तथा पेशेवर संस्कारों के हमारे भावनात्मक पक्ष से जुड़ाव के कारण है। साथ ही हमारी निकटवर्ती यादें भले ही दीर्घ-कालिक अनुभवों के आगे फीकी पड़ गई हो किंतु ये यादें हमारे पास विविध और सहज रूप में रह गई हैं। हम स्वयं को एक मनुष्य, सामाजिक प्राणी, नागरिक, पेशेवर के रूप में किस प्रकार देखते हैं? चलिए देखते हैं कि हमारे आस-पास के सामाजिक और राजनीतिक परिवेश का परवर्ती काल में आकलन कैसा था, जब हम लोगों ने परिवर्तन के उद्देश्य से सिविल सेवा का चयन किया था।

हम 1990 के दशक के बाद से भारत की भू-राजनीतिक स्थिति के संक्षिप्त इतिहास को देखते हैं। तीन दशक पूर्व भारत द्वारा शुरू की गई आर्थिक यात्रा, फ्रांसीसी उपन्यासकार विक्टर ह्यूगो के मशहूर कथन "जिस विचार का समय आ गया हो, उसे धरती पर कोई रोक नहीं सकता है....." को चरितार्थ करती है। यह वो दौर था जब सोवियत संघ का विखंडन हो रहा था, यूरोपीय संघ एक हो रहा था। चीन भी विकास के पथ पर अग्रसर था तथा अमेरिका बहुत ही चतुराई से जोड़-तोड़ की राजनीति में लगा हुआ था। उसी दौर में कुछ वक्त पूर्व अस्तित्व में आए दक्षिण एशियाई देशों के संगठन "सार्क" को भी अपनी सार्थकता बनाए रखने के लिए चुनौतीपूर्ण स्थिति का सामना करना पड़ रहा था तथा अमेरिका "आसियान" देशों को अपने पाले में लाने में लगा हुआ था। जबकि इसी दौर में भारत अपनी जटिलताओं से घिरा हुआ था, जिसे विश्व के बहुपक्षीय संस्थानों द्वारा उत्सुकतावश देखा जा रहा था।

1990 के दशक के प्रारंभ में भारत दहाई अंकों के महंगाई दर, 7.5 प्रतिशत के सकल राजकोषीय घाटे तथा कुल घरेलू उत्पाद के 54 प्रतिशत के आंतरिक घाटे से जूझ रहा था। वर्ष 1991 तक महंगाई दर 14 प्रतिशत, कर्ज देने की दर 17.9 प्रतिशत तथा 3.6 प्रतिशत के वास्तविक ब्याज दर जैसी चुनौतीपूर्ण स्थिति से भारत को सामना करना पड़ रहा था।

भारत की विकास दर केवल 1.1 प्रतिशत तथा प्रति व्यक्ति आय केवल 303 डॉलर एवं सार्वजनिक निजी भागीदारी आधार (पीपीपी) 1230 अमेरिकी डॉलर ही था। भारत की लगभग आधी आबादी गरीब थी। जो क्रय शक्ति समता के आधार पर प्रतिदिन अपने गुजारे के लिए मात्र 1.90 डॉलर ही खर्च कर पाती थी, जो कि विश्व के प्रति व्यक्ति खर्च के औसत का मात्र 36 प्रतिशत था। विश्व की औसत आयु-सीमा (दर) 65.6 वर्ष के मुकाबले भारत में औसत आयु-सीमा (दर) केवल 58.3 वर्ष ही थी। 1990-91 के बीच भारत का राजकोषीय घाटा आश्चर्यजनक रूप से 9.4 प्रतिशत तक पहुंच गया, जो कि 1980 के प्रथम छमाही के राजकोषीय घाटे की 6.3 प्रतिशत से 3 प्रतिशत ज्यादा था। भारत के पास बची कुल 1.1 अरब अमेरिकी डॉलर के विदेशी मुद्रा भंडार से केवल दो हफ्तों का ही सामान आयात हो सकता था, जिससे बाहरी भुगतान संकट ने भारत को (आईएमएफ) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के दरवाजे पर ला खड़ा किया था। 1990 के दशक में कठोर संरचनात्मक सुधारों एवं खाड़ी संकट के कारण भारत का आर्थिक विकास बाधित हो गया। सुधार के लिए विचार (अवधारणा) तो बहुत थे, पर समाधान किसी के पास नहीं था।

1990 के प्रारंभ में अपनाए गए आर्थिक उदारीकरण से भारत आज वर्ष 2022 में काफी आगे आ चुका है। आज वर्ष 2022 के लिए अर्थशास्त्रियों और विश्लेषकों द्वारा सकल घरेलू उत्पाद के 6.7 प्रतिशत के राजकोषीय घाटे पर चर्चा की जाती है। अब भारतीय अर्थव्यवस्था 3.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की है जो 1991 के 266 अरब अमेरिकी डॉलर की अर्थव्यवस्था के मुकाबले 10 गुणा ज्यादा है। आज सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में सर्विस क्षेत्र का योगदान लगभग 50 प्रतिशत (वर्ष 1991 में केवल 39 प्रतिशत), जबकि 1991 में औद्योगिक क्षेत्र का जीडीपी में 30 प्रतिशत योगदान के मुकाबले आज यह 29 प्रतिशत है। 1991 के मुकाबले भारत में प्रति व्यक्ति आय 7.5 गुणा बढ़कर मार्च 2022 में 2321 अमेरिकी डॉलर है जो उस वक्त केवल 300 अमेरिकी डॉलर ही हुआ करता था। 29 जुलाई 2022

तक भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगभग 573.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर (1991 के मुकाबले 76 गुणा अधिक) के रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया, जो एक ठीक-ठाक मानदंडों से काफी ऊपर है। आज भारत दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होने के साथ-साथ सबसे ज्यादा विदेशी मुद्रा भंडार वाले देशों में पांचवा स्थान रखता है।

वर्ष 2022-23 में भारत के बजट का आकार 39.45 लाख करोड़ रुपये का है, जो वर्ष 1991-92 में केवल 1.3 लाख करोड़ रुपये का हुआ करता था, जिसमें गैर-योजनागत व्यय के लिए 79,697 करोड़ रुपए तथा योजनागत व्यय के लिए 33,725 करोड़ रुपए ही हुआ करता था। 33,725 करोड़ रुपए के योजनागत व्यय से भी अधिकांश हिस्सा तनख्वाह और स्थापना मद पर खर्च हो जाया करता था। जन्म के समय औसत आयु सीमा जहां केवल 60 वर्ष हुआ करती थी आज वह 70 वर्ष से भी अधिक की है। प्रति व्यक्ति औसत आय आज 6 गुणा से भी अधिक हो चुका है तथा पीपीपी आधार पर यह 5 गुणा से भी ज्यादा हो गया है।

अगस्त 1991 में जहां सीपीआई मुद्रास्फीति दर 16.7 थी वही आज यह लगभग 7 प्रतिशत है। इतने कम समय में ही भारत में सूचीबद्ध कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 11.5 गुणा से भी ज्यादा बढ़ चुका है। वही कंटेनरों की आवाजाही भी 7 गुणा बढ़ चुकी है। जैसे-जैसे देश की अर्थव्यवस्था में स्थिरता आई, आर्थिक कानूनों में एक बड़ा बदलाव लाकर उनके सुधार का कार्य किया गया, जिससे भारतीय व्यवसाय में तेजी आई और अंततः अर्थव्यवस्था बढ़ने लगी।

भारत सभी ब्रेटन वुड्स संस्थानों और अन्य बहुपक्षीय संस्थाओं के संस्थापक सदस्य होते हुए ब्रिक्स जैसे फोरम में अपनी सदस्यता से महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता रहा है। पिछले तीन दशकों में भारत ने एक सर्व-समावेशी विदेश नीति का अनुसरण किया है। जिसमें शामिल "सार्क" देशों से नेबरहुड फर्स्ट नीति शामिल है तथा एशिया के अन्य देशों से व्यापक आर्थिक और सामरिक संबंध स्थापित करने के लिए लुक ईस्ट पॉलिसी भी शामिल है। इसके अतिरिक्त भारत यूनाइटेड नेशन, एशियन डेवलपमेंट बैंक, न्यू डेवलपमेंट बैंक तथा जी-20 का संस्थापक सदस्य रहा है। जी-20 को व्यापक रूप में उभरते तथा विकसित देशों का प्राथमिक आर्थिक केंद्र माना जाता है। भारत पूर्वी एशिया सम्मेलन जैसे अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में एक आवश्यक और प्रभावशाली भूमिका भी निभा रहा है। भारत सार्क और बिस्मटेक का भी सदस्य है। संयुक्त राष्ट्र संघ के कई शांति अभियानों का भारत हिस्सा रहा है। जून 2020 तक भारत संयुक्त राष्ट्र में पाँचवा सबसे बड़ा सैन्य योगदानकर्ता है। विश्व व्यापार संगठन के संस्थापक सदस्य और एक प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र के रूप में भारत ने कृषि और कपड़ों पर GATS, SPS, TRIPS, TRIMS जैसे नियम आधारित बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था में सब्सिडी और प्रतिस्पर्धी उपायों के समझौते में भी भाग लिया है। इसके अलावा जैसा कि भारत अपनी आजादी के 75 वें वर्ष का जश्न मना रहा है, यह यूरोपीय यूनियन (ईयू) के साथ राजनीतिक संबंधों के 60 वर्षों का भी प्रतीक है। आज भारत यूरोपीय संघ का 10 वां सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है जो यूरोप के व्यापार का मात्र 2.1 प्रतिशत ही है, जो चीन(16.2%), अमेरिका(14.1%), और ब्रिटेन (10%) से काफी पीछे है।

महामारी के बाद उत्पन्न परिस्थिति, रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण आपूर्ति क्रम (सप्लाई चैन) पर क्षतिकारक प्रभाव तथा बढ़ी हुई वैश्विक महंगाई ने भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर संकट खड़ा कर दिया है। ये संकट भारतीय कारोबार के मुनाफे तथा प्रसार एवं विकास की संभावनाओं पर गंभीर संकट पैदा कर सकता है।

भारतीय सार्वजनिक क्षेत्रों में राजकोषीय जोखिम पिछले तीन दशकों में बढ़ा है। सरकारों के लिए इसका आभास होना सबसे महत्वपूर्ण है एवं वित्तीय जोखिमों के परिणाम सरकार और लोगों (शासित) की वित्तीय अपेक्षाओं से भिन्न होते हैं। वित्तीय जोखिम मापने, उसे कम करने के लिए सुदृढ़ संरचनाओं को बल देने जैसे अनुवर्ती विषय एक महत्वकांक्षी राज्य के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। होने वाले जोखिम को कम करने के लिए गारंटी के लिए उच्चतम सीमा, देनदारी या उधार पर सीमा तथा लघु, मध्यम या लंबी अवधि में उत्पादक व्यय के लिए ऋण के बीच संतुलन जैसे सार्वजनिक संस्थाओं की गतिविधियों पर पर्याप्त नियंत्रण की आवश्यकता होती है। जोखिम को मुख्य रूप से बाजार-संचालित साधन (आपदा राहत, मोचन निधि (रिडेंशन फंड), बंध पत्र (बॉन्ड्स) नीतियों द्वारा तथा वित्तीय क्षेत्र को नियामक के अंदर लाकर कम किया जा सकता है। सिस्टम की मजबूती जिसमें बजटीय प्रावधान, आकस्मिक निधि (Contingency fund) मूल्य निर्धारण, जमा, आपदा, गारंटी आदि माध्यमों से बदलते जोखिम को एक सीमा तक अवशोषित तथा सहन कर सकता है।

चूँकि भारत ने निजी क्षेत्र को एक समावेशी शासन और राष्ट्र विकास के लिए अपनाया है इसलिए यहां व्यवसाय में होने वाले जोखिमों को देखना अहम है। जिसमें उच्च जोखिम पर शीर्ष नेतृत्व का दृष्टिकोण तथा वर्ष 2022 से 2031 तक के लिए जोखिम को तीन आयामों में देखा जा सकता है; व्यापक आर्थिक जोखिम, परिचालन जोखिम तथा सामरिक जोखिम।

व्यापक आर्थिक जोखिम औद्योगिक इकाइयों के व्यवहार और सरकार तथा उनके बीच के पारस्परिक संबंधों से उत्पन्न होते हैं ना की किसी एक कम्पनी इकाई से। यह राजकोषीय और मौद्रिक नीतियों, व्यापार एवं निवेश तथा राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक विकास से संबंधित है जो कंपनियों (उद्योगों) के वित्तीय संविभाग (पोर्टफोलियो) एवं उनके मूल्यों को प्रभावित करता है। व्यापक आर्थिक जोखिम के लिए महत्वपूर्ण मध्यवर्ती अस्थिर वस्तुओं में वस्तु और शेयर बाजार, व्यवसाय चक्र, बेरोजगारी, महंगाई, ब्याज दर, मूल्य तथा आयात-निर्यात शामिल हैं।

वर्तमान में भारतीय अर्थव्यवस्था के जोखिमों में शामिल है-

i आर्थिक विकास और महंगाई।

ii भारतीय रुपए का कमजोर होना, तथा

iii वैश्विक आपूर्ति चक्र में उत्पन्न व्यवधान का प्रभाव।

भारतीय अर्थव्यवस्था का व्यास्थापन वास्तविक विकास और आगामी जोखिमों पर गुणात्मक प्रभाव डालता है। इनमें ज्यादा से ज्यादा डिजिटल भुगतान, ज्यादा से ज्यादा जीएसटी संग्रहण, कर से जीडीपी अनुपात में परिवर्तन आदि शामिल है। भारतीय अर्थव्यवस्था को नियामक व्यवस्था के अंतर्गत लाने से जो संकट पैदा हो सकता है, उनमें श्रम से संबंधित ज्यादा खर्च, आधारभूत संरचना का गैर-प्रतिस्पर्धी साबित होना या प्रबंधन के सामने अस्वीकार्य जोखिमों का प्रस्तुत होना शामिल है।

उच्च संरक्षणवाद से उत्पन्न जोखिम: महामारी ने अर्थव्यवस्थाओं को संरक्षणवाद की तरफ ढकेला तथा उन्हें अपने अंदर देखने और घरेलू हितों की रक्षा के लिए मजबूर किया है। भारत में भी बड़े औद्योगिक इकाइयों को आत्मनिर्भरता या "आत्मनिर्भर" बनाने के लिए विशेष बल दिया जा रहा है।

कर्ज की वसूली ना हो पाना तथा ऋण में सहयोग देना: छोटे और मध्यम वर्गीय उद्योगों पर पड़ने वाले वित्तीय दबाव की स्थिति तब ही स्पष्ट होगी जब अर्थव्यवस्था पूर्ण रूप से खुल जाएगी जिससे सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम वर्गीय उद्योगों के ऋण नवीकरण और आसान ऋण शर्तों के जरूरत को स्पष्ट करेगी।

अन्य पहलुओं में वर्तमान औद्योगिक संरचना, उनके विस्तार का आकार तथा कंपनियों की उत्पादकता आदि पर प्रभाव शामिल है।

प्रतिस्पर्धात्मक परिचालन जोखिम का आधारभूत व्यापारिक गतिविधियों पर सीधा असर होता है जो सूक्ष्म, लघु तथा मध्यम वर्गीय उद्योगों, इज ऑफ डूइंग बिजनेस तथा सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों द्वारा उठाए जाने वाले जोखिमों पर निर्भर करता है।

शीर्ष रणनीतिक जोखिम यह दर्शाता है कि बाजार में व्यवसाय का बदलता प्रारूप मजदूरों को नौकरी में बनाए रखने और दक्ष कामगारों को आकर्षित करने में समस्या उत्पन्न करता है। इन आशंकाओं में उच्च प्रतिभाओं को आकर्षित और नौकरी में बनाए नहीं रख पाना तथा आगे की परियोजनाओं की व्यवहारिकता को बनाए रखना शामिल है। छोटी और लंबी दोनों अवधियों में परिवर्तन के प्रति विरोध मुख्य चुनौती के रूप में देखा जाता है, जिनमें कार्यस्थल पर विरोध से उत्पन्न अस्थिरता आदि शामिल है।

जीवाश्म इंधनों पर निर्भर उद्योगों द्वारा लोगों से संबंधित मामले विशेषतौर पर पूंजी तथा व्यापारिक आदर्शों और उनकी रणनीतियों को प्रभावित करने वाले जलवायु परिवर्तन जैसे मामलों को आश्चर्यजनक रूप से ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं समझा जाता, जो कि उद्योगों के लिए मुख्य पांच जोखिमों में से एक है। अर्थव्यवस्था में बढ़े उतार-चढ़ाव से उत्पन्न अनिश्चितता तथा लंबी अवधि में इससे पड़ने वाला प्रभाव एक महत्वपूर्ण विषय है। साइबर सुरक्षा तथा डाटा गोपनीयता अब भी एक महत्वपूर्ण विषय है और इसी प्रकार इसके नियामक मामले भी हैं। डेलॉयट इंडिया द्वारा किये गये बैंकिंग फ्रॉड सर्वेक्षण के चौथे संस्करण में शामिल 78% लोगों का मानना है कि अगले 2 वर्षों में भारतीय बैंकिंग के क्षेत्र में धोखाधड़ी में बढ़ोत्तरी होगी।

महामारी से प्रेरित राजकोषीय और नीतिगत बदलावों ने व्यापारिक निष्पादन को भी प्रभावित किया है।

वर्तमान समय में सिविल सेवा को प्रभावित करती समस्याएं

सिविल सर्वेंट्स के प्रोफेशनल स्तर और उनकी क्षमता निर्माण में कमी होना।

एक निष्प्रभावी प्रोत्साहन व्यवस्था द्वारा योग्य अधिकारी को पुरस्कृत नहीं कर पाना।

पुराने तथा सख्त नियम और कार्यप्रणाली जो एक सिविल सर्वेंट को कुशलता से कार्य करने नहीं देता।

पारदर्शी कार्यप्रणाली और जवाबदेही की कमी के साथ-साथ सचेतकों(whistle-blower) के लिए अपर्याप्त सुरक्षा।

राजनीतिक हस्तक्षेप के कारण अनियंत्रित तबादलों तथा कार्यकाल को पूरा न कर पाने की शंका।

आचार और मूल्यों में हास ने भ्रष्टाचार और परिवारवाद को तेजी से बढ़ावा दिया है।

वंशगत मानसिकता का हावी होना।

सिविल सर्वेंट द्वारा परिवर्तन के प्रति विरोध में होना।

वित्तीय जोखिम का आकलन एवं प्रबंधन।

वर्तमान परिदृश्य में एक प्रभावी रणनीतिक नेतृत्व की चुनौतियां

रणनीतिक नेतृत्व, रणनीतिक प्रबंधन तथा रणनीतिक योजना एक जटिल और पेचीदा प्रक्रिया है जो एक संगठन को अपरिचित क्षेत्रों या प्रांतों तक लेकर जाता है। किंतु इसके लिए एक कारगर रणनीतिक नेतृत्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार वे ना तो सफलता के व्यावहारिक सूत्र प्रदान करते हैं और ना ही सभी संगठनात्मक समस्याओं के लिए त्वरित उपचार आश्वासित करते हैं। इसके विपरीत यह एक प्रक्रिया है जो एक संगठन को ऐसी यात्रा पर लेकर जाता है, जिसमें समस्याओं को सुनने और उन्हें हल करने की एक रूपरेखा तैयार करना होता है। रणनीतिक योजना, प्रबंधन तथा नेतृत्व में कुछ छिपी हुई कठिनाइयां भी होती हैं, जिन से बचा जाना चाहिए। वह इस प्रकार हैं:-

रणनीतिक प्रबंधन और योजना केवल अधिकारिक मान्यता/प्रमाणन तथा नियामक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग किया जाता है ना कि किन्हीं व्यावसायिक कार्यविधि की योग्यता बढ़ाने के लिए।

समाधान प्रक्रिया को आगे बढ़ाना, बिना इस बात को सोचे की 21 वीं सदी के संगठनों को किन जटिल समस्याओं से दो-चार होना पड़ रहा है। उद्योगों द्वारा जिन वास्तविक विषयों से आमना सामना होना पड़ता है उन्हें "धीमे उपचार" की आवश्यकता होती है ना की "त्वरित और आसान" समाधान की; जो प्रथम दृष्टि में तो आकर्षक लगते हैं, किंतु लंबी अवधि में नाकाम सिद्ध होते हैं।

संगठनों की आंतरिक राजनीति के कारण जब शीर्ष नेतृत्व द्वारा रणनीतिक प्रबंधन प्रक्रिया का समर्थन नहीं किया जाता, इस स्थिति में कोई भी रणनीति कितनी ही अच्छी क्यों ना हो, संगठन के हित के बारे में सोचने वालों से कुछ नहीं ले पाने के कारण उनका निष्फल होना निश्चित हो जाता है।

सभी प्रबंधकों को साथ में लिए बिना, योजना बनाने का कार्य जब एक "योजनाकार" को सौंप दिया जाता है तो वहां सूचनाओं की कमी और निराकरण की समस्या उत्पन्न होती है, जिसके फलस्वरूप रणनीतिक गड़बड़ हो जाती है।

जब एक औद्योगिक इकाई बहुत सारी आंतरिक समस्याओं से घिरी हो, जो प्रबंधक को शक्तिहीन बना दे, इस स्थिति में रणनीतिक योजना और प्रबंधन दोनों ही निष्फल सिद्ध होते हैं; क्योंकि मैनेजर केवल आंतरिक मुद्दों का हल निकालने में ही व्यस्त हो जाता है, ना कि बाहरी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने में।

जब एक संस्था अपने दृष्टिकोण में इतनी अधिक नियमबद्ध या ढांचाबद्ध हो जाती है कि वो रचनात्मकता और लचीलेपन जैसे पहलुओं को नकार देती है, तो रणनीतिक योजनाओं के लिए कठिनाई उत्पन्न होती है। दूसरी ओर अटकलों या अंतः दृष्टि पर अत्याधिक निर्भर रहना एक संगठन के लिए महंगा साबित हो सकता है। क्योंकि रणनीति सीढ़ियों की एक श्रृंखला है जिसको कार्यान्वित करना आवश्यक है। अतः एक सोची-समझी विस्तृत योजना आवश्यक है।

अन्य पहलुओं में, किसी एक योजना पर कायम नहीं रहना एवं अत्यधिक रूढ़िवाद शामिल है। चूंकि भविष्य में संगठनों के लिए यह आवश्यक है कि बाजार की बदलती स्थिति के अनुरूप खुद में बदलाव लाने के लिए उनका कुशल और लचीला होने के साथ-साथ अपने मूल संरचना एवं उनकी मूल योग्यता में समानता को बनाए रखना है। इस प्रकार एक कारगर रणनीतिक प्रबंधन के लिए औपचारिक और अनौपचारिक योजना का होना आवश्यक है।

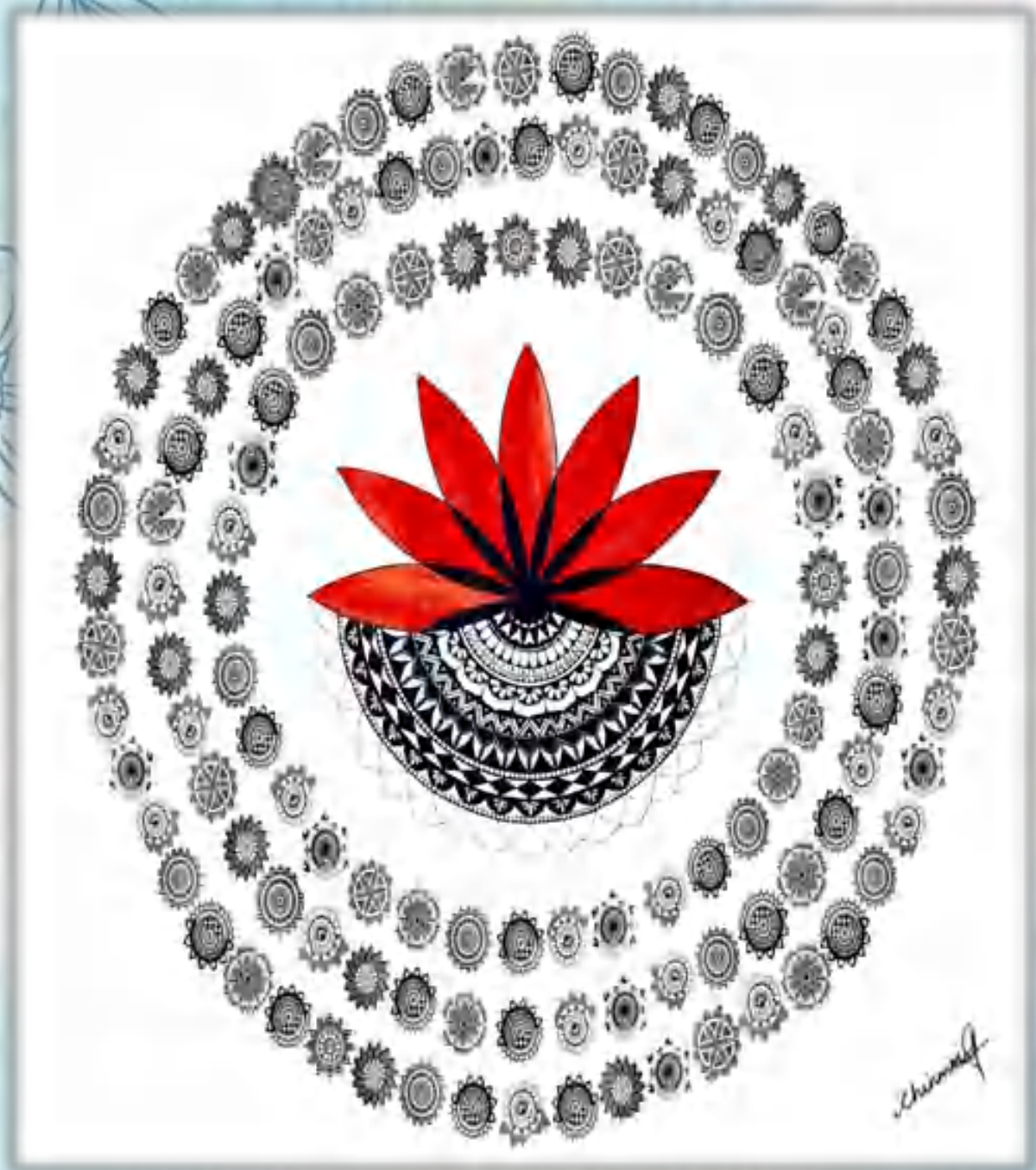
यद्यपि रणनीतिक मार्गदर्शक अनेक क्षेत्रों से आते हैं किंतु उनमें प्रभावकारिता अधिक सुस्पष्ट निम्न अभिलक्षणों से आते हैं- अस्पष्ट कार्य परिवेश के पूर्वानुमान तथा उनको समाविष्ट करने की क्षमता के साथ-साथ एक व्यापक तस्वीर के लिए अपने दृष्टिकोण के प्रति निष्ठा तथा अनुकूलता बनाए रखना। एक रणनीतिक मार्गदर्शक में संवेदना, कलात्मकता, मन को छू लेने वाली प्रेरणा तथा आत्म-बोध भी दिखाई देता है।

यद्यपि हम सभी इस प्रचलित मुहावरे से परिचित होंगे कि "सभी कामों में हाथ आजमाने वाला किसी क्षेत्र का विशेषज्ञ नहीं होता" लेकिन, इस मुहावरे का पूर्ण रूप यह है कि "सभी कामों में हाथ आजमाने वाला भले ही किसी क्षेत्र का विशेषज्ञ ना हो, लेकिन बहुधा वह एक क्षेत्र के विशेषज्ञ से बेहतर होता है।"

इस प्रकार के मार्गदर्शक उपरोक्त मुहावरे को अपनी कार्यशैली में अपनाते हैं, क्योंकि वे अपने सीमित विशेषज्ञता में अपने ज्ञान और कौशल को कम नहीं होने देना चाहते। फिर भी बहुत से विषयों पर उन्हें थोड़ी बहुत जानकारी होती है। नेतृत्व जैसे एक मूल आचरण की परीक्षा से एक सिविल सर्वेंट को अपने कार्यकाल में बार-बार गुजरना पड़ता है। रणनीति एक ही समय पर विधिवत और आकस्मिक दोनों हो सकती है। कहने का तात्पर्य है कि "रणनीतिक योजना प्रक्रिया" के सहज और क्रमिक विकास के लिए यथोचित योजना तथा उसमें पर्याप्त स्थान की आवश्यकता होती है। यह किसी भी संगठन को लीडर बनाने वाले रणनीतियों के सार्थक होने की प्रमुख अनिवार्यता है जिसका कि एक संगठन को पालन करना चाहिए। रणनीतिक मार्गदर्शक एक दृष्टिकोण का निर्माण कर सकता है, उसे व्यक्त कर सकता है, उत्साह पूर्वक अपने पास रखता है तथा उसे पूरा करने के लिए अनवरत प्रयासरत रहता है। जब दुनिया भर

के देश भू-अर्थशास्त्र को ज्यादा महत्व दे रहे हैं तो भारतीय कॉर्पोरेट्स भी सरकार से अपने विदेश नीति में उनकी चिंताओं को शामिल करने तथा विदेश नीति को उसी के अनुरूप बनाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। 21वीं सदी में भारतीय नौकरशाही दृढ़ विश्वास और अधिक ऊर्जा के साथ परिवर्तन को अपनाते हुए दिखाई देगी। 10 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के अर्थव्यवस्था की ओर अभी तो शुरुआत भर हुई है, जिसके लिए नौकरशाही को नई सोच पद्धति तथा मशीनरी की आवश्यकता होगी। मैं चाहता हूँ कि हम सब इस बात पर विचार करें कि क्या हम जांच संबंधी, अन्वेषण, विनियमन, निर्णय, सलाहकार आदि भूमिकाओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़े हुए हैं तथा शासन के बदलते दृष्टिकोण, लक्ष्य इत्यादि के साथ हम खुद को कितनी कुशलता के साथ संतुलित कर पाते हैं तथा क्या हम सब एक स्वस्थ और खुशहाल जीवन जी रहे हैं?
 ॐ सर्वेषां स्वस्तिर्भवतु, सर्वेषां शान्तिर्भवतु ।
 सर्वेषां पूर्णा भवतु, सर्वेषां मंगल भवतु ॥
 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः ।
 सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मां कश्चिद् दुःख भाग्भवेत् ॥

सुश्री चिन्मय गोस्वामी पुत्री डॉ. नीलोत्पल गोस्वामी (महानिदेशक रेलवे वाणिज्यिक) द्वारा
मंडला कलाकृति की एक झलक



कार्यालय स्वास्थ्य और विवेकानंद कार्यस्थल तनाव से कैसे निपटें

आधुनिक दुनिया में, कार्यस्थल अक्सर चुनौतियों, मांगों और तनाव का केंद्र बन जाता है। समय सीमा को पूरा करने, लक्ष्य हासिल करने और पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाने का दबाव हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर भारी पड़ सकता है। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ कार्यस्थल पर तनाव के प्रबंधन और अच्छे स्वास्थ्य के लिए बहुमूल्य ज्ञान और प्रेरणा प्रदान करती हैं। इस लेख में, कार्यालय स्वास्थ्य और स्वामी विवेकानन्द के ज्ञान के बीच



संबंध का पता लगाने और कार्यस्थल के तनाव से निपटने के व्यावहारिक तरीकों की खोज करने का प्रयास किया गया है।

स्वामी विवेकानन्द: ज्ञान के प्रतीक:

भारत के सबसे सम्मानित आध्यात्मिक गुरुओं और दार्शनिकों में से एक, स्वामी विवेकानन्द एक दूरदर्शी विचारक थे जिनकी शिक्षाएँ आज भी दुनिया भर में लोगों को प्रेरित और मार्गदर्शन करती रहती हैं। उनके गहन ज्ञान ने जीवन के विभिन्न पहलुओं को छुआ, जिसमें ज्ञान की खोज, आत्म-साक्षात्कार और एक संतुलित और सार्थक जीवन जीना शामिल है। कार्यस्थल के तनाव और स्वास्थ्य के संदर्भ में, उनकी अंतर्दृष्टि विशेष रूप से प्रासंगिक है।

संतुलन साधना: स्वामी विवेकानन्द की प्रमुख शिक्षाओं में से एक है जीवन में संतुलन बनाने का महत्व। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमें अपने पेशेवर लक्ष्यों का पीछा करते समय अपने शारीरिक और मानसिक पहलुओं की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। ऑफिस की भागदौड़ भरी दुनिया में अक्सर यह संतुलन बिगड़ जाता है। आइए देखें कि हम अपने पेशेवर जीवन में संतुलन लाने के लिए स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाओं को कैसे शामिल कर सकते हैं।



1. स्व-प्रबंधन:

स्वामी विवेकानन्द ने एक बार कहा था, "जब तक आप स्वयं पर विश्वास नहीं करते तब तक आप ईश्वर पर विश्वास नहीं कर सकते।" स्वयं पर यह विश्वास ही आत्म-प्रबंधन की नींव है। कार्यस्थल के तनाव से निपटने के लिए, अपने समय और ऊर्जा का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करना आवश्यक है। स्पष्ट लक्ष्य और प्राथमिकताएँ निर्धारित करके शुरुआत करें। अपनी सीमाओं को पहचानें और अति प्रतिबद्धता न दिखाएं। अपने कार्यभार को प्रबंधित करके, आप उस तनाव को कम कर सकते हैं जो अक्सर अत्यधिक ज़िम्मेदारियों के साथ आता है।

2. दिमागीपन और एकाग्रता:

स्वामीजी की शिक्षाएँ अक्सर ध्यान और एकाग्रता की शक्ति के इर्द-गिर्द घूमती थीं। कार्यालय में, ध्यान भटकाना भारी हो सकता है, जिससे कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो जाता है। अपनी दिनचर्या में ध्यान को शामिल करने से

एकाग्रता में सुधार और तनाव को कम करने में मदद मिल सकती है। अपने दिमाग को साफ करने और खुद को तरोताजा करने के लिए छोटे-छोटे ब्रेक लेने से आपकी उत्पादकता और सेहत में महत्वपूर्ण अंतर आ सकता है।

3. उत्कृष्टता की खोज:

स्वामी विवेकानन्द ने व्यक्तियों को अपने चुने हुए क्षेत्रों में उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि समर्पण और उत्साह से किया गया कार्य पूजा बन जाता है। कार्यस्थल में, उत्कृष्टता की मानसिकता अपनाने से आपको अपने प्रयासों में संतुष्टि पाने और अवास्तविक उम्मीदों को पूरा करने के दबाव को कम करने में मदद मिल सकती है। याद रखें कि सफलता एक यात्रा है, सिर्फ एक मंजिल नहीं।

4. लचीलापन और अनुकूलनशीलता:

स्वामी विवेकानन्द का जीवन प्रतिकूल परिस्थितियों में लचीलेपन से प्रतिष्ठित था। उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा लेकिन अपने मिशन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से कभी पीछे नहीं हटे। आप कार्यस्थल पर असफलताओं और दबाव से बच नहीं सकते। स्वामी विवेकानन्द द्वारा बताए गए लचीलेपन और अनुकूलन क्षमता के रास्ते को अपनाने से आपको इन चुनौतियों से अधिक आसानी से निपटने में मदद मिल सकती है। हतोत्साहित होने के बजाय बाधाओं को विकास के अवसर के रूप में देखें।

5. भावनात्मक बुद्धिमत्ता:

स्वामीजी ने अपनी भावनाओं को समझने और उन पर काबू पाने के महत्व पर जोर दिया। भावनात्मक बुद्धिमत्ता कार्यस्थल में एक मूल्यवान कौशल है, जो आपको जटिल पारस्परिक संबंधों को संतुलित करने और तनाव को प्रभावी ढंग से संभालने में सक्षम बनाती है। अपनी और अपने सहकर्मियों की भावनाओं के प्रति जागरूक रहने से टीम वर्क बेहतर हो सकता है और कार्यस्थल पर टकराव कम हो सकता है।

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ:

स्वामी विवेकानन्द की कुछ शिक्षाएँ कार्यालय कल्याण और कार्यस्थल तनाव से निपटने के विषय से मेल खाती हैं:

1. "दिल और दिमाग के बीच संघर्ष में, अपने दिल की सुनें।"

यह उद्धरण हमें अपने अंतर्ज्ञान और आंतरिक ज्ञान पर भरोसा करने की याद दिलाता है, खासकर कार्यस्थल में तनावपूर्ण निर्णयों के सामने।

2. " आपको अंदरूनी रूप से बढ़ना होगा।"

कोई आपको सिखा नहीं सकता, कोई आपको आध्यात्मिक नहीं बना सकता। आपकी अपनी आत्मा के अलावा कोई अन्य शिक्षक नहीं है।"

स्वामी विवेकानन्द के शब्द व्यक्तिगत विकास और आत्म-जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डालते हैं, जो तनाव प्रबंधन और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं।

3. "खुद को कमजोर समझना सबसे बड़ा पाप है।"

कार्यस्थल पर तनाव के प्रबंधन में अपनी ताकत और क्षमताओं पर विश्वास एक प्रमुख तत्व है। चुनौतियों से पार पाने की अपनी क्षमता को कम मत आंकिए।

कार्यस्थल कल्याण के लिए व्यावहारिक रणनीतियाँ:

1. **व्यायाम और शारीरिक स्वास्थ्य:** स्वामीजी ने संतुलित जीवन की नींव के रूप में शारीरिक स्वास्थ्य की वकालत की। नियमित व्यायाम को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से तनाव कम करने, मूड में सुधार और ऊर्जा के स्तर को बढ़ाने में मदद मिल सकती है।

2. **कार्य-जीवन संतुलन:** स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ संतुलन बनाए रखने के लिए अपने पेशेवर और व्यक्तिगत जीवन के बीच स्पष्ट सीमाएँ बनाना सिखाती हैं।

3. प्रभावी संचार: कार्यस्थल की खुशहाली के लिए खुला और ईमानदार संचार आवश्यक है। सहकर्मियों और वरिष्ठों के साथ चिंताओं और मुद्दों पर चर्चा करने से कार्य वातावरण अधिक सौहार्दपूर्ण हो सकता है।

4. समय प्रबंधन: अपने समय का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करें और खुद पर कार्यों का अधिक बोझ डालने से बचें। अपने काम को प्राथमिकता दें और वास्तविक लक्ष्य निर्धारित करें।

5. मार्गदर्शन और समर्थन: सलाहकारों या सहकर्मियों से मार्गदर्शन और समर्थन प्राप्त करें। स्वामी विवेकानन्द अक्सर अधिक अनुभव वाले लोगों से सीखने के महत्व पर जोर देते थे।

निष्कर्ष:

स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएँ कार्यालय के कल्याण और कार्यस्थल तनाव के प्रबंधन की खोज में एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकती हैं। आत्म-प्रबंधन, सचेतनता, उत्कृष्टता की खोज, लचीलापन और भावनात्मक बुद्धिमत्ता पर उनकी शिक्षाओं को शामिल करके, हम आधुनिक कार्यस्थल की चुनौतियों को अधिक आसानी से पार कर सकते हैं और अपने पेशेवर जीवन में उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते हैं। जैसा कि स्वामीजी ने एक बार कहा था, "उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" कार्यालय कल्याण के क्षेत्र में, यह संदेश हमें संतुलन तलाशने, तनाव का प्रबंधन करने और स्वयं के प्रति सच्चे रहते हुए उत्कृष्टता के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।



श्री तिलक राज

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक्रीलिक चित्रकारी, सुश्री चित्रा बंसल वरिष्ठ निजी सचिव (महानिदेशक)



मेरी बेटियाँ

खुशियों की बहार बन के आई जीवन में, मेरी बेटियाँ,
ईश्वर का प्यारा उपहार बनके आई जीवन में, मेरी बेटियाँ ।
मैं आज के जमाने की हूँ, पर यकीन मानिए फिर भी बेटियों को जीवन में लाना आसान न था,
उसी सोच से जा टकराई मेरी सोच जिसका पहले भी कोई फसाना ना था।
पहली बेटी, मेरी त्रिशा बनकर आई माँ लक्ष्मी का साया,
पर कहा क्या सबने 'छोटी सी उम्र में बेचारे पिता का है बोझ बढ़ाया।
हमारे परिवार में तो पहला पुत्र होने की रीत है, तुमने वो रीत नहीं निभाई,
मैंने कहा मैं और मेरी बेटी हैं अलग, ऐसी कोई रीत हमें समझ ही नहीं आई।
पर लड़की के जन्म की नहीं बाँटते मिठाई, ना ही मनाते हैं खुशियाँ,
मैंने कहा मेरे घर की है पहली खुशी, मेरी तो इसी से है दुनियाँ।
फिर बीते नौ वर्ष और ईश्वर ने फिर बेटी का वरदान दिया,
नाम रखकर नित्या जिसका, गणपति का उसे नाम दिया।
लोगों ने खुशियाँ कम और हमदर्दी ज़्यादा दिखाई,
कहा भगवान की है मर्जी ये तो, जो फिर से बेटी तुम्हारे घर आई।
भगवान ने चाहा तो तीसरा ज़रूर पुत्र होगा, और एक ना एक दिन तुम्हारा परिवार भी सम्पूर्ण होगा ।
कभी-कभी सोचती हूँ, लागों की कितनी खोखली है सोच,
पढ़े-लिखे इस समाज में बेटियाँ आज भी हैं बोझ।
पर मेरी बेटियाँ मेरी सोच का उदाहरण बनेंगी, बनेंगी मेरा गर्व,
आत्म-निर्भर बनाकर उनको मैं भी बनूँगी उनका गर्व।
कुछ कान्तिकारी नहीं करना, बस बनाना है उनको एक बेहतर इन्सान
नई पीढ़ी की बुनियादों में, डालनी है बेहतर सोच की जान ।
गीली मिट्टी की खुशबू और प्यार से महकती चिट्ठियाँ,
मेरे लिए मेरा पूरा संसार हैं मेरी बेटियाँ।

सुश्री कामना वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

21वीं सदी में हिंदी

भारतेंदु के समय से ही हिंदी को लेकर कई वर्ग आपस में खींचतान करते रहे हैं। हालांकि भारतेंदु अपने समय में ही कह गए- 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल', फिर भी उस समय में या उसके बाद भी इस बात को चरितार्थ करने के कितने प्रयास हुए हैं और वे कितने समर्पित ढंग से किये गए हैं, यह अपने आप में ही एक संदेहास्पद सवाल है। स्वाधीनता के बाद जब हिंदी को पूरे देश की भाषा बनना था, तब राजनेताओं द्वारा दिखाई गई अकर्मण्यता और क्षेत्रीय भाषाओं की राजनीति ने इस सपने को सपना ही रहने दिया। यह कितनी अजीब बात है कि जब विश्व का प्रत्येक बड़ा देश अपनी भाषा में संयुक्त राष्ट्र संघ में बोल सकता था, तब भी देश को 1977 तक अपनी भाषा हिंदी में संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा को सम्बोधित करने के लिए इंतजार करना पड़ा। वह तो भला हो अटल बिहारी बाजपेयी और जनता पार्टी सरकार का कि विदेश मंत्री के तौर पर संयुक्त राष्ट्र की महासभा में गए अटल जी ने पहली बार हिंदी में सभा को संबोधित करने का अभूतपूर्व काम किया। उस समय इस देश में सभी गर्व का अनुभूति कर रहे थे, हालांकि यह काम बहुत वर्षों पहले ही किया जा सकता था।

बात अगर 21वीं सदी की करें तो हिंदी की स्थिति में काफी हद तक सुधार देखने को मिल रहा है। खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा हिंदी का बड़े मंचों से प्रयोग हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। सरकार द्वारा हिंदी को प्रोत्साहित करने के लिए नीतियां बनाई जा रही हैं एवं उनको लागू किया जा रहा।

आज देश के नागरिक भी अपनी बात को हिंदी में रखने में हिचकिचाते नहीं और न ही किसी प्रकार की हीन भावना का अनुभव करते हैं। इसका एक कारण तो प्रधानमंत्री एवं अन्य प्रभावशाली लोगों द्वारा हिंदी के प्रयोग से देश के मन में आई भाषिक चेतना है। जहां पहले हर कहीं अंग्रेजी को ज्ञान का मापदंड बनाकर प्रस्तुत किया जाता था तथा उसे पढ़े-लिखे की भाषा मानकर हिंदी को हीनतर दृष्टि से देखा जाता था, वहीं आज यह विभेद खत्म होता नजर आ रहा है। अभी हाल में टोक्यो ओलम्पिक के स्वर्ण पदक विजेता नीरज चोपड़ा से एक इंटरव्यू में कोई सवाल अंग्रेजी में पूछा गया तब उन्होंने बिना किसी हिचक से कहा कि भाई हिंदी में पूछ लो। जाहिर है ऐसा नैतिक साहस और अपनी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर पूरे दमखम के साथ रखने की चेतना आज से 20 साल पहले देखने को नहीं मिलती थी। आज बड़े तकनीकी संस्थान भी हिंदी भाषा में अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था शुरू कर रहे। इसके अतिरिक्त क्रिकेट मैच की कमेंट्री से लेकर बॉलीवुड के अवार्ड शोज तक हर कहीं आज प्लेयर्स और कलाकार हिंदी भाषा का प्रयोग करते हैं, यह संस्कृति बीते दिनों देखने में न के बराबर दिखती थी।

अगर सोशल मीडिया की बात करें तो वहां भी लोग अब देवनागरी में हिंदी लिखने को तवज्जो देते हैं, इसका सबसे प्रमुख कारण है - गूगल इनपुट कीबोर्ड जैसी नई टाइपिंग तकनीक जहां व्यक्ति बहुत आसानी से हिंदी को देवनागरी में लिख लेता है। इस एक तकनीक ने एक तरह से हिंदी में टेक्सटिंग को बहुत आसान बनाकर एक तरह से सोशल मीडिया की दुनिया में हिंदी भाषा के प्रयोग के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है।

हालांकि इस युग में हिंदी को लेकर लोगों में एक चेतना जागृत हुई है, फिर भी सम्पूर्ण देश में हिंदी को स्थापित करने के लिए अभी भी बहुत प्रयास करने की जरूरत है क्योंकि भाषा हमारी अभिव्यक्ति का साधन मात्र नहीं है बल्कि इसका सीधा सम्बन्ध हमारी संस्कृति और जातीय चेतना से है। अगर हम अपनी भाषा में काम करना शुरू करेंगे और अपनी भाषा को तवज्जो देंगे तो निश्चित ही हमारे भीतर एक उत्साह पैदा होगा, जो स्वयं तथा राष्ट्र के हित के लिए बहुत जरूरी है।



श्री नितेश लाठर, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

नई राह बना ले

यदि कोई राह न बताए मंजिल की, नई राह बना ले।
जग वाले भटके हुए को, और भटका दिया करते हैं।
दिल के पास आकर, जोर का झटका दिया करते हैं।
घात लगा जीवन मृत्यु के, बीच लटका दिया करते हैं।
गद्दार तो चलती सांसों को भी, अटका दिया करते हैं।
अपनी समझ अपनी शक्ति, अन्तर की आह बना ले।
यदि कोई राह न बताए मंजिल की, नई राह बना ले।

अग्नि परीक्षा है कदम कदम पर हे वीर, घबराना नहीं है।
सुमनों पर पड़े या अंगारों पर कदमों को हटाना नहीं है।
जिस पत्थर से खाई पहली ठोकर, दूसरी खाना नहीं है।
पग के छाले, घाव छाती के, किसी को दिखाना नहीं है।
तू स्वयं सारथी और अर्जुन, मन में ऐसी चाह बना ले।
यदि कोई राह न बताए मंजिल की, नई राह बना ले।

जिनसे भी मिले आशीष तुझे, हे वीर, लेते रहिएगा।
जो भी निर्बल राह में, उनको संबल देते रहिएगा।



श्री प्रवीण कुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अतीत के अखबार उठा ले

आज चुनाव की समरभूमि में फिर से,
पक्ष विपक्ष अब कमर कसे खड़ा है।
कोई वन्देमारतम कहेगा जोर जोर से,
तो कोई विरोध करने में आगे अड़ा है।।

किसी ने अपने मुंह पर लगा हुआ लहू,
आज सुबह सुबह छुपकर धो लिया है।
कल तक हो रहे थे आपस में जूतमजूता,
उनका रामलीला में भरतमिलाप हो लिया है।।

अभी से मन्दिर महंगाई फ्री के राशन में,
नेता देश की जनता को उलझाने लगा है।
टीले पर खड़ा होकर कोई हिंसक भेड़िया,
सबको अहिंसा परमोधर्म समझाने लगा है।।

कोई लोकतंत्र बचाने का अब रोना रोएगा,
कोई विकास और -विनाश की बात करेगा।
कुछ रात को भी अब दिन बताने लगेंगे,
कोई स्पष्टवादी नेता दिन को भी रात कहेगा।।

मर्यादाएं होने लगेंगी अब तार तार कलंकित,
कोई अश्लील गाली भी गलोच करने लगेगा।
किसी की जबान पर होंगे रावण और दुर्योधन,
कोई सनातन धर्म को ही खत्म करने लगेगा।।

कोई दिखेगा यहां रामचरितमानस को फाड़ता,
कोई इसका समर्थन और घोर विरोध करेगा।
कोई वोट पाकर विजयी होने की चाह में,

झूठे वादे करके जनता में रोष-जोश भरेगा।।

जनता ही तो सही निर्णय लिया करती है,
यदि देश हित में वह सही हथियार उठा ले।
गलत निर्णय में उसका लहू बहता देखा है,
चाहे लहू भरे अतीत के अखबार उठा ले।।

श्री उदयराज यादव

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिंदगी

कल एक झलक जिंदगी को देखा,
वो राहों पे मेरी गुनगुना रही थी,
फिर ढूँढा उसे इधर-उधर
वो आंख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी
एक अरसे के बाद आया मुझे करार,
वो सहला के मुझे सुला रही थी
हम दोनों क्यूँ खफ़ा हैं एक दूसरे से
मैं उसे और वो मुझे समझा रही थी,
मैंने पूछ लिया- क्यों इतना दर्द दिया कमबख्त तूने,
वो हँसी और बोली- मैं जिंदगी हूँ पगले
तुझे जीना सिखा रही थी।

श्री विशाल भाटी

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एक्रिलिक चित्रकारी सुश्री युवानी मदान पुत्री श्री तिलक राज मदान वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी



शहीद

जज्ब कर अपने मोतियों को
हर पल मुस्कुराती है,
समाज में इस तरह वो
सारी रीत निभाती है।
बड़े जतन से
पालती है अपने नन्हे-मुन्ने को,
तुम्हें अपने पापा जैसा बनना है
यही बात उनको रोज सिखाती है।
वैसे तो वो कभी भूलती नहीं
अपने प्यार को,
पर जब हृद से ज्यादा याद सताती है
तो खोल कर संदूक चुपके से
अपने प्रिय की वर्दी से लिपट जाती है।
सेवा कर अपने माता-पिता की
सारे घर के लिए कमाती हैं,
इस तरह एक शहीद की पत्नी
माँ, बहन, बेटी, बहू और बेटा
बन जाती हैं.....
समेट कर अपने सब पुराने सपनों को
छोटे से बक्से में, बस पति के सपनों को जीती हैं
और एक दिन वो भी पति की तरह
सेना में शामिल हो जाती है।
जज्ब कर अपने मोतियों को
हर पल मुस्कुराती है
समाज में इस तरह वो
सारी रीत निभाती हैं.....



श्री नीरज तहलान
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

गिरना भी अच्छा है

गिरना भी अच्छा है,
औकात का पता चलता है...
बढ़ते हैं हाथ जब उठाने को ...
अपनो का पता चलता है ।

जिन्हें गुस्सा आता है
वो लोग सच्चे होते हैं,
मैंने झूठो को अक्सर
मुस्कुराते हुए देखा है....

सीख रहा हूँ मैं भी,
मनुष्यों को पढ़ने का हुनर
सुना है चेहरे पे...
किताबों से ज्यादा लिखा होता है...

श्री सुमित कुमार
डी.ई.ओ.



कलर पेंसिल चित्रकारी, सुश्री ईहा मदान पुत्री श्री तिलक राज मदान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

ये तेरा जीवन सफर है।

ये तेरा जीवन सफर है।
सफर में भले ही तू अकेले ही क्यों ना हो,
पर हिम्मत बनाए रखना ।
कदमों में अगर छाले ही क्यों ना हो,
साहस बनाए रखना।
दुख की लहरों से न डर तू
सुख की आस बनाए रखना।
मंजिलें भले ही गगनचुंबी क्यों न हो,
तू आत्मविश्वास बनाए रखना।
हे मानुष न डर तू इन कठिन तूफानों से
तू हौसले बनाए रखना
अब ना ठहर तू
कदम बढ़ाए चलना, दूसरों में जोश बंधाए रखना।
ना है तू अब अकेला,
है काफिला अब तेरा, ये सिलसिला बनाए रखना
ये है जीवन सफ़र तेरा, खुद का वर्चस्व बनाए रखना।

श्री योगेश

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

इतिहास की परीक्षा

इतिहास की परीक्षा भी उस दिन चिंता से हृदय फड़कता था, कुछ बुरे शगुन घर से निकलते ही मेरा दायां नैन फड़कता था।

ना कोई सवारी मिली, मैं पैदल ही चल पड़ा, गेट पर चपरासी ने बताया कि तुम पांच मिनट हो लेट।

मैं मेल ट्रेन की तरह भागा कमरे के भीतर आया। पर्चा पढ़ते ही सिर घूम गया चक्कर आया सिर झूम गया दिमाग से सब कुछ निकल गया लिख दिया, हुमायूँ बीरबल के बेटे ने बचपन वो अकबर के साथ आँख मिचौली खेले थे।

लिख दिया इतिहास की कोई ना बात सच्ची इसको पढ़ना बेकार की माथा पच्ची हैं। हो गया परीक्षक पागल सा मेरे उत्तरों को देख देख बोला सब छात्रों में होनहार है यही कह सारे पत्रों में से मेरा ही पत्र छाँट लिया और शून्य अंक देकर सारे नंबर काट लिए।

सुश्री नीलम मलिक

पूर्व वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

बच्चों के लिए लघु कथाएँ

भाग 1

ज़िन्दगी एक प्रतिध्वनि है (Life is an echo)

एक बार की बात है। एक लड़की थी, जिसका नाम था त्रिशा। एक दिन स्कूल से लौटने पर त्रिशा ने अपनी माँ से पूछा कि 'माँ आज हमने इंग्लिश में एक phrase पढ़ा 'life is an echo' क्या आप मुझे इसका मतलब समझाएंगी? माँ ने कहा - 'Life is an echo' मतलब ज़िन्दगी एक प्रतिध्वनि की तरह है। जो कुछ आप इस ज़िन्दगी को दोगे वही आपको वापिस मिलेगा।

जैसे प्रतिध्वनि में हम जो कुछ बोलते हैं वही हमें सुनने को मिलता है। अगर हम अच्छे शब्द बोलते हैं तो अच्छे सुनते हैं और अगर बुरे शब्द बोलते हैं तो बुरे सुनते हैं।

माँ ने आगे कहा - 'पता है त्रिशा यह संसार एक बहुत ही बड़ा कर्मक्षेत्र है। जैसे किसान खेत में जैसा बीज बोता है वैसा ही फल पाता है। उसी तरह हम इस ब्रह्माण्ड को जैसी ऊर्जा देंगे वैसी ही वापिस पाएँगे। तुम्हारे अच्छे कर्म, तुम्हारी सकारात्मकता सब लौटकर तुम्हारे पास आएँगे। इसलिए कैसी भी परिस्थिति हो अपने अच्छे कर्म और अपनी सकारात्मकता कभी मत छोड़ना। क्योंकि जो कुछ तुम भगवान की बनाई इस कायनात को दोगी वही पूरी ताकत के साथ तुम्हारे पास वापिस आएगा।

माँ ने फिर कहा - "जैसे पेड़ों से हमें ऑक्सीजन मिलती है परन्तु अगर इंसान अपनी लालच में इस तरह की पेड़ काटने की होड़ में ना लगता तो आज हमें ऑक्सीजन के लिए कीमत ना चुकानी पड़ती।"

त्रिशा ये सब बहुत ही ध्यान से सुन रही थी। उसके छोटे से दिमाग ने बहुत कुछ ग्रहण कर लिया था। वह बोली - 'मैं समझ गई माँ। आज से मैं सबको प्यार और अच्छाई दूँगी ताकि बदले में मुझे भी प्यार और अच्छाई मिले और अपने दोस्तों को भी यही समझाऊँगी। मैं इस संसार को ज़िन्दगी दूँगी ताकि वो भी बदले में हमें ज़िन्दगी वापिस दे। मैं आज से अधिकाधिक वृक्षारोपण करूँगी और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को भी प्रोत्साहित करूँगी कि वो भी वृक्षारोपण करें ताकि भविष्य में हमें ब्रह्माण्ड से ज़िन्दगी मिले वायरस नहीं।

त्रिशा की माँ अपनी बेटी की समझने की क्षमता से बहुत खुश थी। उसने तो अपनी बेटी को 'Life is an echo' का सिर्फ मौखिक अर्थ बताया था पर वास्तव में क्या करना चाहिए यह उसकी बेटी ने उसे बताया। उसने भी फैसला किया कि इस वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए जो भी प्रयास वो कर सकती है करेगी। क्योंकि ज़िन्दगी प्रतिध्वनि की तरह है। जो कुछ भी हम इसको देंगे वही लौटकर हमारे पास वापस आएगा।

इसलिए आप ज़िन्दगी को क्या दे रहे हैं हमेशा इसका ध्यान रखना।

सुश्री कामना वर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भाग 2

स्वच्छता में ईश्वर बसता है

त्रिशा का स्वच्छता से दूर-दूर तक कोई संपर्क नहीं था। चीज़ों को जगह पर न रखना, अपनी चीज़ें इधर-उधर फैलाना, उसकी रोज़ की आदत बन गई थी। कितनी ही बार उसकी माता ने उसे स्वच्छता का महत्व समझाया किन्तु त्रिशा में कोई सुधार न आया। ऑनलाइन कक्षा के बाद किताबें न समेटना, खेलने के बाद खिलौने न उठाना, खाना खाने के बाद अपने जूठे बर्तन न उठाना, उसकी लापरवाही दिन-व-दिन बढ़ती ही जा रही थी। थककर और दुखी होकर उसकी माँ ने उसे सबक सिखाने का ईरादा किया।

एक दिन, उसकी माँ उसे घूमने के लिए बीच पर ले गई। थोड़ी देर घूमने के बाद अचानक एक बड़ी लहर उठी और पानी के साथ ढेर सारा कूड़ा भी किनारे पर आ गया। ये देख त्रिशा हैरान हो गई। उसने अपनी माँ से पूछा - 'माँ, ये बीच के पानी के साथ इतना सारा कूड़ा कहाँ से आया ?

माँ ने कहा- ये वही कूड़ा है जो इंसान समुद्रों, नदियों में डालता है। अब इनके पास कोई कूड़ा-घर तो है नहीं, इसलिए इसने वापिस लौटा दिया और साथ ही दिया प्रदूषित पानी और ढेर सारी बिमारियाँ।

माँ ने फिर कहा - 'पता है त्रिशा, इस वक़्त हमारा देश किन-किन समस्याओं से जूझ रहा है?'

त्रिशा ने कहा 'हाँ माँ, प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, गरीबी, बेरोज़गारी और अब ये कोरोना।'

माँ ने पूछा- 'क्या तुम्हें पता है कि इन सब समस्याओं का मूल कारण क्या है ?'

त्रिशा - 'नहीं माँ।'

माँ- 'इन सबका मूल कारण है इंसान का धरती माँ के प्रति स्वार्थी स्वभाव ।'

त्रिशा - 'कैसे माँ ?'

माँ - 'कई सदियों से इंसान धरती माँ का अपने निजी स्वार्थ के लिए इस्तेमाल कर रहा है। यहाँ तक की, धरती माँ भी हमेशा उसे देने के लिए तैयार थी। जैसे एक माँ अपने ज़रूरतमंद बच्चे को हमेशा ही देने के लिए तैयार रहती है उसी तरह, धरती माँ ने भी अपने पर्वत, अपनी नदियाँ, जंगल, जानवर, अनमोल रसायनों का भंडार सबकुछ इंसान को अर्पित कर दिया। पर, आदमी इतना स्वार्थी और लालची हो गया कि अपने स्वार्थी मकसदों को पूरा करने के लिए उसने धरती माँ का शोषण शुरू कर दिया। जैसे कि नदियों में कूड़ा फेंक उन्हें प्रदूषित करना, वाहनों का अत्यधिक इस्तेमाल कर वायु प्रदूषित करना, हानिकारक विस्फोटक बनाकर कुदरत से छेड़छाड़ करना आदि। यहाँ तक कि पहले वो जानवरों को पालतू पशुओं की तरह इस्तेमाल करता था परन्तु फिर उसकी जिह्वा को ऐसा स्वाद लगा कि उसने जानवरों को खाना शुरू कर दिया जो प्रकृति में असंतुलन का मुख्य कारण बन गया।

त्रिशा यह सब बहुत ही ध्यान से सुन रही थी।

माँ ने आगे कहा - 'तंग आकर धरती माँ ने फैसला किया कि वह इंसान को सबक सिखाकर रहेगी। जो प्लास्टिक, पोलिथिन हम रोज़ उस पर फेंकते थे उसने उसी में इंसान को लपेट दिया। ज़रूरत से ज्यादा मांस खाने का नतीजा यह हुआ कि रोज़ कोई-न-कोई संक्रामक विषाणु इंसान पर हमला करता है। हवा को इतना प्रदूषित कर दिया है कि अब हमें शुद्ध हवा की कीमत चुकानी पड़ रही है। ओर वो समय दूर भी नहीं है कि जो चीज़ें हमें कुदरत से मुफ्त मिली हैं जैसे हवा, पानी, ऑक्सीजन उनकी कीमत भी इंसान को चुकानी पड़ेगी क्योंकि, यदि ऐसा हुआ तो इंसान वो कीमत चुका नहीं पाएगा। इसलिए अब वक़्त आ गया है कि इंसान अपनी आदतों में सुधार लाए, नहीं तो उसका अपना ही आस्तित्व खतरे में आ जाएगा।

त्रिशा ने कहा 'माँ, मैं समझ गई। आज से मैं भी धरती माँ को स्वच्छ रखने की कोशिश करूँगी।'

माँ ने कहा - 'और तुम्हें पता है कि इसकी शुरुआत तुम्हें कहाँ से करनी चाहिए?' त्रिशा - 'हाँ माँ, अपने घर से और उससे भी पहले खुद से।'

माँ ने कहा - 'हाँ, तुम्हारा इरादा और तुम्हारी निष्ठा बहुत मायने रखती है। यदि तुम्हें स्वच्छता का महत्व पता है तो तुम अपने घर और वातावरण दोनों को स्वच्छ रख पाओगी।'

यह कहावत वाकई में सच है कि - 'स्वच्छता में ईश्वर बसता है'

सुश्री कामना वर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

'सोच बदलो बेटे बदलो' या 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ'

"बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" ये नारा आजकल बहुत प्रचलित है। हॉलांकि यह प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा बेटियों की हालत को सुधारने के लिए एक अभियान/ योजना है परन्तु अब यह एक आम नारा बन गया है। लेकिन इस लेख में मैं जिस पहलू के बारे में बात करना चाहती हूँ वो इस योजना के तहत लड़कियों को मिलने वाले अधिकारों के बारे में नहीं है। मेरा सवाल यह है कि हम लड़कियों को क्यों पढ़ाना चाहते हैं? जवाब है ताकि वो पढ़-लिखकर कुछ बन सकें, आत्म निर्भर बनें, अपने अधिकारों के लिए लड़ना सीखें।

क्या कभी कोई ये सोचकर अपनी बेटियों को बड़ा करता है या पढ़ाता है कि कल को पढ़-लिखकर हमारी बेटियाँ दूसरों के बेटों को सँभालेंगी और दूसरों के बेटे के माँ- बाप का सहारा बनेंगीं। मैंने अक्सर लड़कों को ये बातें करते सुना है कि 'आजकल की लड़कियाँ अच्छी नहीं हैं, 'वो मेरे माँ- बाप की सेवा नहीं करेगी।' अरे भाई तुम खुद अपने माँ बाप की सेवा क्यों नहीं करते। या फिर तुम भी उसके माँ-बाप की सेवा करो ताकि वो भी दिल से तुम्हारे माँ बाप की सेवा करे। लड़के खुद तो एक गिलास पानी का भी नहीं उठाते और दूसरों की बेटी से उम्मीद करते हैं की वो नौकरी करे, उसकी सेवा करे, उसके घरवालों की सेवा करे, उसके बच्चों की देखभाल करें और खुद को कहीं खो दे। और यदि वो अपने बारे में सोच ले तो वो संस्कारी नहीं है। क्या यही सोचकर हम अपनी बेटियों को शिक्षा देते हैं।

आजकल जितना खर्च लड़के की शिक्षा पर लगता है उतना ही लड़कियों की शिक्षा पर लगता है। लड़कियों को पढ़ाते वक़्त हम यही सोचते हैं कि वो भी कल को पढ़-लिखकर डॉक्टर, इंजीनियर, पायलेट, टीचर बनेंगीं। कभी ये सोचा है किसी ने की ये कल को पत्नी बनेंगीं, बहू बनेंगीं। शादी उसकी ज़िन्दगी का एक अहम हिस्सा हो सकती है उसकी ज़िन्दगी नहीं। ऐसी सोच हमारी पुरानी पीढ़ियों की होती थी तभी वो लड़कियों को शिक्षा नहीं देते थे और उन्हें पराया धन समझते थे। शादी के बाद घर-परिवार की जितनी ज़िम्मेदारी एक बहू की है उतनी बेटे की भी है। और लड़की के माँ-बाप, जिन्होंने अपनी बेटी को बेटे समान पाला है, शिक्षा दी है, उनका अपनी बेटी पर उतना ही हक़ है जितना अपने बेटों पर। जब दोनों के माँ-बाप ने बराबर मेहनत की है तो अहमियत सिर्फ लड़के के माता-पिता को क्यों ? लड़का जब शाम को काम से घर आता है तो उसे साफ़ घर, खाना सब मिलता है। बच्चों के होमवर्क की भी कोई चिंता नहीं। परन्तु एक लड़की जब काम से घर आती है उसे खाना बनाना, बच्चों का होमवर्क कराना, घर की और ज़िम्मेदारियाँ घेर लेती हैं। परन्तु फिर भी वो हर ज़िम्मेदारी को दिल से निभाती है। और यदि वो गृहिणी है, तो फिर तो उसे कुशल गृहिणी बनना ही होगा और यदि कोई घर-गृहस्थी से आगे बढ़कर अपने लिए जीने की सोचे तो उसमें संस्कारों की कमी है।

अगर हम सच में नारी को सशक्त करना चाहते हैं तो पहले हमें उसे जज करना छोड़ना होगा।

उसने ये कपड़े क्यों पहने है, उसने उससे शादी क्यों की, सास-ससुर के साथ क्यों नहीं रहती, बच्चा क्यों नहीं करती, ऐसी सोच बदलनी होगी। और अगर लड़कियों को संस्कारी बनाना है तो पहले बेटों को संस्कारी बनाना होगा। आखिर में मैं ये कहूँगी कि 'सोच बदलो बेटे बदलो' तो 'लड़की बचाओ लड़की पढ़ाओ' का अभियान अपने आप पूरा हो जायेगा। घर-गृहस्थी भी संभल जाएँगे और संस्कारों को सिर्फ बेटियों में ढूँढने की भी ज़रूरत नहीं रहेगी।

सुश्री कामना वर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



म्यूरल चित्रकारी, सुश्री तन्वी बंसल पुत्री सुश्री चित्रा बंसल वरिष्ठ निजी सचिव
(महानिदेशक)

दहेज प्रथा

दहेज प्रथा वर्तमान समाज की सर्वाधिक दूषित कलंकित और घृणित प्रथा है। यह एक ऐसा विशाल अजगर है, जो धीरे धीरे सारे समाज को निगलता जा रहा है और विश्व के वातावरण को दूषित और विषैला बना दिया है। इसने कितने ही परिवारों को डस लिया तथा कितनी ही कुंवारी कन्याओं के जीवन को निगल लिया है। यदि अब भी इस भयंकर अजगर को समाप्त नहीं किया गया तो निश्चय ही यह पूरे समाज को नष्ट कर देगा। आज तो यह दूषित प्रथा एक अभिशाप बन चुकी है। प्रारंभ में इसका स्वरूप कुछ और ही था। प्राचीन काल में विवाह के समय अपने नए गृहस्थ जीवन को प्रारंभ करने के लिए अन्य घर जाने वाले कन्या के जीवन की शुभकामना करते हुए माता पिता एवं निकट संबंधियों की ओर से उसे कुछ उपहार भेंट किए जाते थे। इससे वर वधू को नया जीवन शुरू करने में सुविधा होती थी किन्तु, जिस सद्भावना के साथ इस प्रथा का श्रीगणेश हुआ था वही आज समाज के लिए अभिशाप सिद्ध हो रहा है।

प्रतिदिन प्रकाशित होने वाले समाचार इस सत्य के साक्षी हैं। कभी कोई कुएं में कूदकर अथवा अन्य किसी साधन का सहारा लेकर अपने और सहाय जीवन से मुक्ति पाती है। इस प्रकार की घटनाओं का होना क्या किसी सभ्य समाज के लिए लज्जास्पद नहीं है? गहराई से विचार करने पर इस समस्या में लोभ स्वार्थ भाव का रूप स्पष्ट दिखाई देता है। नई दुल्हन अपने साथ चाहे कितना ही धन और सामग्री क्यों न लाए परन्तु स्वार्थ लिप्सु वर के लोभी माता- पिता व परिवार के अन्य सदस्य कभी संतुष्ट नहीं होते। किसी न किसी वस्तु के अभाव के कारण बहू को दिन-रात खरी-खोटी सुनने को विवश होना पड़ता है। उस अभाव की पूर्ति के लिए उसके माता-पिता पर दबाव डाला जाता है। अच्छे सभ्य कहे जाने वाले परिवारों में भी बहू पर अत्याचार किए जाते हैं, तरह-तरह की यातनाएं दी जाती हैं, यहाँ तक कि दहेज न मिलने की दशा में मिट्टी का तेल डालकर उसे आग के हवाले कर दिया जाता है। किसी के प्राणों से खेलने का यह अमानुषिक कार्य मनुष्य के पतन की पराकाष्ठा ही तो है जिसके नाम पर यह दानव लीला हो रही है। यह प्रथा निश्चय ही निंदनीय और त्यागने योग्य है। आज हमारा देश प्रगतिशील राष्ट्रों की पंक्ति में खड़ा है जहाँ शिक्षा की प्रतिशत दर में भी वृद्धि हुई है। प्राचीन काल में जिसमें नारी जाति को पूज्य और सम्माननीय माना जाता था उसी के साथ आज लज्जाजनक व्यवहार हो रहा है। यद्यपि देश में शासन ने इस प्रथा पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानूनों में समुचित सख्ती का प्रावधान किया है किंतु लोभ और स्वार्थ में अंधे इन कानूनों की भी चिंता नहीं करते। आवश्यकता इस बात की है कि जागरुक युवक-युवतियाँ इस चुनौती को स्वीकार करें और इस कलुषित प्रथा का बहिष्कार करें। जो नवयुवक शिक्षित होकर भी दहेज की मांग करता है वह स्पष्ट रूप से अपनी अयोग्यता को स्वीकारता है। आत्मविश्वास से युक्त आत्मशक्ति पर भरोसा रखनेवाला व्यक्ति अपने श्रम से अर्जित धन से ही सुख का अनुभव करता है। दहेज तो एक झूठी तसल्ली है। सच्चा दहेज तो वधू का मधुर स्वभाव और शिष्टाचरण है जिसका सम्मान करना ही श्रेष्ठ और सुखकर है।

श्री नईम अहमद

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जीवन और मृत्यु

वह दृश्य बड़ा ही भीषण था
न हुआ कभी ऐसा रण था ।
जीवन और मृत्यु लड़ते थे
रह रह कर खूब अकड़ते थे
दोनों ने ही यह ठाना था
निर्णय कर के ही जाना था।

मृत्यु उवाच -

मैं देशहीन हूँ, कालहीन हूँ
शून्यवत खुद में विलीन हूँ
न मेरा कोई आदि अंत
मैं हूँ संहारक शिव अनंत ।
दशानन जैसे वीरों को
वसुधा पर गिरते देखा है
मैंने श्रीकृष्ण को निद्रा से
चिर निद्रा जाते देखा है।
था विद्यमान तुझसे पहले
और यहीं रहूंगा तेरे बाद
तीनों कालों में लोकिता हूँ
मैं मृत्यु हूँ, मैं निश्चित हूँ।
है बहुत समय से जीवित हूँ
अब समय बदलने वाला है
जीवन! तू अब हो जा प्रसन्न
ईश्वर से मिलने वाला है।

जीवन उवाच

अब शिष्टाचार का दौर नहीं
सह चुका बहुत, अब और नहीं
कायर करते ईश्वर-वन्दन
निर्भीक उठाते स्वयं चरण ।
है बहुत समय से जीवित तू

अब समय बदलने वाला है
जीवन! तू अब हो जा प्रसन्न
ईश्वर से मिलने वाला है।

जीवन उवाच

मैं पुष्पों की पंखुड़ियों में
और नदियों की अल्हड़ियों में
आ जा मृत्यु ! अब मार मुझे ।
है सही कि मैं परिपूर्ण नहीं हूँ
लोभी भी हूँ, कामी भी हूँ
निज स्वतंत्रता का प्रेमी हूँ
सेवक भी हूँ, स्वामी भी हूँ।
मेरा स्वभाव तो जीवन है
मैं तुझ पर असि न चलाऊंगा।
मैं जीवन हूँ, मैं जीवित हूँ
मरकर भी मर न पाऊँगा।
मैं जीवन हूँ, मैं जीवित हूँ
मरकर भी अमर हो जाऊँगा।

सुश्री प्रीति पराशर
लेखापरीक्षक

भारत की माटी

महाराणा का गौरव हो या वीर शिवा का साहस हो
छत्रसाल का खड्ग वार या राणा सांगा की छाती हो
दुर्गा, लक्ष्मी की समर-कला, रानी पद्मा का जोहर हो
पृथ्वी का सर-संधान हो या सिख गुरुओं की परिपाटी हो
लिए निरंतर आगे बढ़ती, गगन-तुल्य विस्तृत थाती
मलयगिरी से अधिक सुहावनी, भारत तेरी यह माटी

सुखदेव, भगत और राजगुरु या बलिदान, सिंह आजाद का हो
हो सुभाष की फौज निडर, बिस्मिल अशफ़ाक की झाँकी हो
मंगल का हो वह शंखनाद, सन सत्तावन की क्रांति हो
करूँ शहादत याद सभी की, खादी हो या खाकी हो
मातृभूमि तेरे कण-कण रमती, गगन तुल्य विस्तृत थाती
मलयगिरी से अधिक सुहावनी, भारत तेरी यह माटी

जिसे सँवारा बलिदानों से, उसे बिखरने न देंगे
जिसे पाया है सर्वस्य गँवा के, फिर से लुटने न देंगे
चेतावनी है देशद्रोहियों! अपनी सीमा का ध्यान रहे,
ये देश शहीदों का गौरव है, हम इसे नहीं झुकने देंगे
अमर रही है, अमर रहेगी, गगन तुल्य विस्तृत थाती
मलयगिरी से अधिक सुहावनी, भारत तेरी यह माटी

सुश्री ईशा वर्मा

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

अजेय-भारत

कितने आए, मिट गए, क्या गोरी और फिर क्या सिकंदर
कितने सुल्तानों के सपने, मिट्टी के अंदर दब गए हैं
तुम कौन हो, ये सोच लो औकात आखिर क्या तुम्हारी
धूल में धूमिल हुए जो, अपनी हदों से आगे गए हैं
लहू से सींचा सपूतों ने जिसे, उस चमन की ओर
जो सर उठे वो काल की फिर भेंट निश्चय चढ़ गए हैं
बलिदान की वेदी में हँसकर प्राणों की आहुति देने
जब समय आया, लाल मां के, निडर आगे बढ़ गए हैं
हिसाब जयचंदो का भी हुआ है भ्रमित न रहना, तनिक भी
उनका भी सीना भेदने कई बरछी और भाले गए हैं
विविधता में एकता है सततता रही, आगे भी रहेगी
भारत को खंडित करने वाले स्वयं, खंडित हो गए हैं।

सुश्री ईशा वर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मेरा बाप कम नहीं मेरी माँ से

अज़ीज़ तर मुझे रखता है वह रगों व जान से
यह बात सच है कि मेरा बाप कम नहीं मेरी माँ से ।
यह माँ के कहने पर कुछ रोष मुझ पर रखता है
यही वजह है कि वह मुझे चूमते हुए झुकता है।

वह आशना मेरे हर कुर्ब से रहा हर दम
जो खुलकर रो नहीं पाया मगर सिसकता है।
जुड़ी है उसकी हर एक हां, मेरी हां से,
यह बात सच है कि मेरा बाप कम नहीं मेरी माँ से।

हर एक दर्द वह चुप-चाप खुद पर सहता है
तमाम उम्र सिवाए मेरे, वह अपनों से कह कर रहता है।
गिले रहते हैं फिर भी, मुझे ऐसे चाक गिरेबान से
यह बात सच है कि मेरा बाप कम नहीं मेरी माँ से ।

पुराना सूट वह पहनता है, कम वह खाता है।
मगर खिलौने मेरे सब, वह खरीद के लाता है।
वह मुझे सोये हुए देखता रहता है जी भर के
न जाने क्या-क्या सोचकर वह मुस्कुराता रहता है।

मेरे बगैर थे सब ख़्वाब उसके वीरान से।
यह बात सच है कि मेरा बाप कम नहीं मेरी माँ से ।

श्री मुकेश कुमार
पूर्व आउटसोर्सिंग स्टाफ

निंदा एक मीठा जहर

निंदा करने व सुनने में व्यक्ति प्रायः आनंद लेता है। जबकि निंदा सुनना व निंदा करना, दोनों ही विष है। इसलिए हमारे महापुरुषों ने तो कहा है 'सपनेहां नहिं देखा परदोषा!' अर्थात् स्वप्न में भी पराये दोषों को न देखना। भगवान बुद्ध ने कहा है, जो दूसरों के अवगुणों की चर्चा करता है, वह अपने अवगुण प्रकट करता है। भगवान महावीर ने भी कहा है कि किसी की निंदा करना पीठ का मांस खाने के बराबर है। विधाता प्रायः सभी गुणों को किसी एक व्यक्ति या एक स्थान पर नहीं देता है। केवल दो ही मनुष्य हर तरह से भले हो सकते हैं। एक वह जो, मर चुका है और दूसरा वह जो, अभी पैदा नहीं हुआ है। यह मानवीय कमजोरी है कि व्यक्ति दूसरों के दोष ढूंढने में अधिक आनंद लेता है। जैसे पानी नीचे की ओर बहता है, उसी तरह हमारा मन भी दूसरों के दोष देखने को ही प्रवृत्त होता है। जबकि हरेक मनुष्य को सदा याद रखना चाहिए कि खूबियां तो दूसरे में कुछ न कुछ जरूर होंगी, फिर क्यों हमें उसके ऐब ही दिखे। महात्मा गांधी ने भी कहा है कि दूसरों के दोष देखने की बजाय हम उनके गुणों को ग्रहण करें। दूसरों की निंदा अश्रेयस्कारी है। अपनी प्रशंसा तथा दूसरों की निंदा असत्य के समान है। जैसे हमारी आंखें चंद्रमा के कलंक तो देख लेती हैं, किंतु अपने काजल को नहीं देख पाती। उसी प्रकार हम दूसरों के दोषों को देखते हैं, हालांकि खुद अनेक दोषों से भरे हैं। दूसरों में जो दोष दिखाई देते हैं, सचमुच उनका कारण हमारे अपने चित्त की दूषित वृत्तियां ही हैं। दूसरों की निंदा किसी भी दृष्टि से हितकर नहीं होती। इस संबंध में एक कवि ने लिखा भी है कि हमें परखने का तरीका नहीं है। कोई वरना दुश्मन किसी का नहीं है। निंदक को यह याद रखना चाहिए कि दुनिया तुझे हजारों आंखों से देखेगी, जबकि तू दुनिया को दो ही आंखों से देख सकेगा। अतः सब तरफ गुण ही ढूंढने की आदत डालो। देखो कितना आनंद आता है। दुनिया में पूर्ण कौन है, हरेक में कुछ न कुछ त्रुटियां रहती हैं। अब्राहम लिंकन ने कहा है कि मेरी सफलता का राज यह है कि मैं दूसरों की अनावश्यक नुक्ताचीनी करके उनका मन नहीं दुखाता। ईसा मसीह ने कहा था, 'लोग दूसरों की आंखों का तिनका तो देखते हैं, पर अपनी आंख के शहतीर को नहीं देखते।' हेनरी फोर्ड ने कहा कि मैं हमेशा दूसरों के दृष्टिकोण को समझने की कोशिश करता हूं। हमारी सद्भावना या दुर्भावना ही किसी को मित्र या शत्रु मानने के लिए बाध्य करती है। सद्भावना अनुकूल स्थिति के कारण होती है और दुर्भावना प्रतिकूल स्थिति के कारण होती है। लोगों के छिपे हुए ऐब जाहिर मत करो। इससे उसकी इज्जत तो जरूर घट जाएगी, मगर तेरा तो ऐतबार ही उठ जाएगा। जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे के दोषों पर उंगली उठाता है, तो उसे याद रखना चाहिए कि पीछे की ओर मुड़ी उसकी तीन उंगलियाँ पहले उसी की ओर संकेत कर रही होती हैं। निंदा- चुगली व्यर्थ ही है। इससे परस्पर वैमनस्य, कटुता और संघर्ष बढ़ते हैं। इसीलिए कहा है कि दूसरों के कृत्याकृत्यों को न देखो, केवल अपने ही कृत्यों का अवलोकन करो। यूं तो लोग चुप रहने वाले की निंदा करते हैं। बहुत बोलने वाले की निंदा करते हैं, मितभाषी की निंदा करते हैं, संसार में ऐसा कोई नहीं है, जिसकी निंदा न होती हो। इसीलिए कहा है- जैसी जाकी बुद्धि है, तैसी कहै बनाय। ताको बुरा न मानिए, लेन कहां यूं जाए। 'केवल दूसरों द्वारा अपनी निंदा सुनकर मनुष्य अपने को निंदित न समझे, वह अपने आप को स्वयं ही जाने, क्योंकि लोक तो निरंकुश है, जो चाहता है सो कह देता है। द्वेषी गुण न पश्यति, दोषी गुणों को नहीं देखता।

श्री अनुराग शुक्ला

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एहसास

ज़िन्दगी तेरा कौन सा पहलू समझूँ मैं, हर पहलू में इतनी उलझन है,
देख ! इस मोड़ तक आते-आते, मेरे मन में कितनी थकन है ?

वक़्त बीतता जाता है, रिश्ते छूटते जाते हैं,
हर बीते वक़्त के बस कुछ जज़्बात रह जाते हैं।

दो साल होने को हैं आज, इक रिश्ता छूटे हुए,
पर ज़ख़्म इतना ताज़ा है दिल का, जैसे कांच के टुकड़े टूटे हुए।

इतना तड़पता है मन, उस रिश्ते को फिर महसूस करने के लिए,
हे भगवान, मैं तुझसे लडु या खुद से, उस रिश्ते को फिर महसूस करने के लिए।

बस 'काश' रह जाता है कि 'ए काश' के ऐसे होता !
कुछ और मोहलत मिल जाती वक़्त से, तो यह वक़्त ऐसा न होता !

खामोश होकर छूटे वो रिश्ते, कुछ तो बोल जाते,
खामोश चेहरा, खामोश आँखें, सपनों में भी सताते ।

एक पयाम मेरा भी तू ले ज़िन्दगी,
मिलूंगी उनसे फिर से मैं, भले ही इस दुनिया में न सही।

कुछ सवाल हैं इस मन में, उनके जवाब चाहिए,
इतनी आसानी से पीछा नहीं छोड़ूंगी पापा, मुझे फिर से आपका साथ चाहिए।

हर कदम पर साथ देकर, अब रास्ते क्यों बदल लिए,
ऐसी क्या खता थी, जो अलविदा भी कहा बिन हमसे रुखसत लिए।

अपनों का जाना, मन को कितना तड़पाता है,
ज़िन्दगी तू क्या है, अब समझ में आता है।

सुश्री कामना वर्मा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आओ चले एक ऐसे जहाँ में

आओ ना चले एक ऐसे जहाँ में
जहाँ इंसान रहते हो

जहाँ नफरत के काँटों के बजाय
प्रेम के फूल खिलते हो
झूठ फरेब की जगह
सच सब कहते हो ॥
आओ ना चले एक ऐसे जहाँ में
जहाँ इंसान रहते हो ॥

जात पात का नामोनिशान ना हो
धर्म सब अपना इंसानियत बतलाते हो
चोरी चकारी कोई ना करें
इज्जत की जिन्दगी सब जीते हो
आओ ना चले एक ऐसे जहाँ में
जहाँ इंसान रहते हो ॥

भेद भाव ना हो जहाँ पर
बराबरी की जिन्दगी सब जीते हो
दूसरे का हक कोई ना खाए
चैन सुकून से सब रहते हो
आओ ना चले एक ऐसे जहाँ में
जहाँ इंसान रहते हो ॥

लड़की होना ना हो अपराध जहाँ पर
सम्मान सब नारी का करते हो
बेफिक्री सी वह उड़ सके
किसी बाज़ की नज़र ना उस पर रहती हो
आओ ना चले एक ऐसे जहाँ में
जहाँ इंसान रहते हो ॥



श्री सूरज मलिक
लेखापरीक्षक

खिड़की पर मेरे...

खिड़की पर मेरे गौरैया आई है ।
बहुत दिनों के बाद चिरैया आई है ॥

महानगर यह बहुत बड़ा है
लेकिन कैसे बड़ा हुआ है।
कितने नीड़ पखेरू कितनों
के कब्रों पर खड़ा हुआ है॥

शायद अनजाने में खिंचती यम की छैया आई है
खिड़की पर मेरे गौरैया आई है ॥

छत पर दाने बिखरे रहते
कोई पंछी नजर न आता ।
बालकनी के बर्तन का पानी
सूरज ही पी कर जाता ॥

स्वप्न नहीं सच है ये कंठ बसाए एक गवैया आई है।
खिड़की पर मेरे गौरैया आई है ॥

मानव अपनी प्रगतिवादिता में
क्या क्या खोकर मानेगा ?
कब कुदरत के साथ संतुलन में
जीने का प्रण ठानेगा ?

शायद यही सब नुकसान बताने हमको भैया, ये आई है।
खिड़की पर मेरे गौरैया आई है ॥

कितने जाति प्रजाति मिटाकर
हम इतने मॉडर्न बने हैं
अस्थि कलश पर धोती गमछा के
टाई पतलून तने हैं॥

धूर्त आधुनिकता खा पी करके छंद सवैया आई है।
खिड़की पर मेरे मेरे गौरैया आई है ॥

सुश्री लवली कुमारी

अर्धांगिनी:श्री बन्दन कुमार

पूर्व कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

लघुकथा.....

महँगी धूप

'कम से कम अपने झुमके ही रख लेती',

सुनार की दुकान से बाहर निकलकर राकेश स्कूटर की किक मारते हुए शारदा से बोला :-

"कोई बात नहीं जी"। ऐसे वक्त के लिए ही तो, गहने बनवाए जाते हैं। वैसे भी कौन सी उम्र रह रही है गहने पहनने की ?

भगवान की दया से अब तो बच्चे बराबर के हो गए हैं,

अपना घर बन जाए, अब तो ! (पर्स को कस कर पकड़ स्कूटर पर बैठती हुई शारदा ने कहा।)

अब तो हो ही जाएगा पी.एफ., बेटियों की आर डी और अब ये गहने भी! बेटियों की शादी कैसे करेंगे? ठंडी सांस भरता राकेश धीरे से बोला। आप चिंता मत करो जी! अभी उम्र ही क्या है बेटियों की ?

नीतू अगस्त में 15वें में लगेगी और मीतू दिसंबर में 17वें में। उनकी शादी तक तो भगवान की कृपा से रोहन इंजीनियरिंग पूरी कर अच्छी नौकरी लग चुका होगा और आपकी रिटायरमेंट को तो अभी 11 साल बाकी है न।

(शारदा अपना हाथ राकेश के कंधे पर रखते हुए आशा भरी आवाज में बोली।) अब तो घर में दम घुटने लगा है। तीन ही तो कमरे हैं और साथ में भाई साहब की फैमिली ।

मैं तो किसी दफ्तर वाले को घर तक नहीं बुला सकता ।

सही कह रहे हो।

दम तो वाकई घुटने लगा है। एक तो घर, गली के आखिरी कोने में है जहां न धूप न हवा। कभी छत पर चले ही जाओ तो जिठानी जी के माथे की त्योरियां और उनके कमैंट्स... उप्फ... बर्दाश्त के बाहर हो जाते हैं। मैं तो तरस गई हूं खुली धूप में बैठने को। राकेश ने मानो उसकी दुखती रग पर हाथ रख दिया हो।

....आइये राकेश बाबू, आपका ही इंतजार था।

(निर्माणाधीन हाउसिंग कॉलोनी के गेट पर मजदूरों को काम समझाता हुआ मैनेजर, राकेश को आता देख गर्मजोशी से उसकी ओर लपका।) स्कूटर उधर खड़ा कर दीजिए। बस कुछ ही दिनों की बात है, पार्किंग भी तैयार हो जाएगी।

ओए, ये सामान हटाओ यहां से, (मजदूर को इशारा करते हुए मैनेजर बोला।) आइए ऑफिस में बैठकर फॉर्मेलिटीज कंप्लीट कर लेते हैं।

पेमेंट तो लाए हैं न...?

हाँ-हाँ पेमेंट तो लाया हूं, एक नजर प्लेट तो दिखा दें; इसीलिए तो आज श्रीमती जी को साथ लाया हूँ।

क्यों नहीं... क्यों नहीं !

आइये, उधर से चलते हैं। भाभी जी, जरा ध्यान से चढ़िएगा!

बस कुछ ही दिनों में रेलिंग भी लग जाएगी। सीढ़ियां चढ़ते हुए मैनेजर बेफिक्री से बोला।

प्लेट्स तो सारे बुक हो चुके हैं जी! आपके जीएम साहब के कहने पर यह आपके लिए रिजर्व रख दिया था।

आप इत्मीनान से देखकर तसल्ली कर लें, मैं ठंडा मंगवाता हूँ। दो मंजिल सीढ़ियां चढ़कर आए राकेश और शारदा को हाँफते देखकर मैनेजर बोला।

राकेश, जरा इधर देखें ! यह किचन कितना छोटा लग रहा है ? ये बेडरूम... इसमें डबल बेड लगने के बाद जगह ही कहाँ बचेगी ? और ये आसपास की बिल्डिंग तो लॉबी की सारी धूप और हवा रोक रही है। मैनेजर के जाते ही, थकान भूलकर फ्लैट का मुआयना करती हुई शारदा अधीरता से बोली।

लीजिए ठंडा पीजिए !

खाली फ्लैट में मैनेजर की गुंजती आवाज से दोनों एकदम चौंक गए ।

भाई साहब ! टेरेस...! गिलास पकड़ते हुए शारदा ने पूछा ।

भाभी जी टेरेस तो कॉमन है सभी फ्लैट्स के लिए । सभी के लिए कॉमन ! ये तो वही बात हो गई! राकेश धीरे से शारदा के कान में फुसफुसाया।

पार्क के पीछे वाली कॉलोनी भी हमारी ही कंपनी बना रही है। वहां कारपेट एरिया तो इससे अधिक है ही, साथ ही एंट्री और टेरेस भी इंडिपेंडेंट है, आप वहां देख लीजिए। स्थिति भाँपते हुए मैनेजर ने तीर छोड़ा ।

उसका प्राइस ? शारदा ने सकुचाते हुए पूछा।

अजी, प्राइस तो बहुत कम है जी। कंपनी तो आपकी सेवा के लिए ही है। बस इस फ्लैट से सिर्फ 8 लाख ही अधिक देने होंगे। खींसे निपोरता हुआ मैनेजर बोला।

मैनेजर साहब ! गुप्ता जी आपको, नीचे ऑफिस में बुला रहे हैं, (नीचे से कुछ सामान उठाकर आ रहे एक मजदूर ने मैनेजर को कहा।)

मैं नीचे ऑफिस में ही हूँ, जो भी आपकी सलाह हो बता दीजिएगा (बाहर निकलते हुए मैनेजर बोला) ।

8 लाख ! इतना तो हो ही नहीं पाएगा। तो अब क्या करें? राकेश की आवाज मानो बहुत गहरे कुएं से आ रही थी।

फ्लैट बेशक छोटा है पर, अपने घर से छोटा तो नहीं है न। छत पर जाने से किसी के साथ कोई चख-चख भी नहीं! यहाँ तुम अपने किसी दफ्तर वाले को भी बड़े आराम से बुला सकते हो।

"पर तुम्हारी वो खुली धूप में बैठने की इच्छा ?"

अजी, मेरा तो आधा दिन स्कूल में ही निकल जाता है। उसके बाद सेंटर पर ट्यूशन। नीतू मीतू भी मेरे साथ 4 बजे के बाद ही घर आती हैं और तुम शाम को 6 बजे के बाद ।

समय ही कहाँ मिलता है, धूप में बैठने का ?

दोनों धीरे-धीरे सीढ़ियां उतरकर ऑफिस की तरफ बढ़ने लगे।

सुश्री लवली कुमारी
अर्धांगिनी: श्री बन्दन कुमार
पूर्व कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

अतरंगी कार्यालय

यहाँ चलता है डी जी सर का राज,
और एम टी एस भाई लोग ले रहे हैं पुरे ठाठ
यहाँ सीनियर ए ओ जमीन से जुड़े हैं,
डी जी सर की गाडी देख, अच्छे- अच्छों के रास्ते मुड़े हैं
कुछ लोग खुश हैं, अपने अपने कोने में,
कुछ अपने में व्यस्त हैं, नॉट इंटेस्टेड कुछ भी होने में
किसी के पास सुनाने के लिए हर विषय पर किस्से हैं,
सारी ऑडिट रिपोर्ट सुधारना किसी के हिस्से हैं
किसी के लिए मंदिर हैं किसी के लिए विद्यालय,
ये हैं हमारा अतरंगी कार्यालय ।

यहाँ कुर्सी के साथ मारामारी है मेज की,
यहाँ इज्जत सबको मिलती है इर्रेस्पेक्टिव ऑफ़ ऐज की,
रेलगाड़ी से ज्यादा यहाँ मंगनी पड़ती है साइड
कभी खींचते हैं टांग, कभी वही करते हैं गाइड ।
फाइलों की यहाँ एफेल टावर सी खड़ी है
1-2 तो बचे हैं जब अलमीरा पड़ी है
यही मिलेंगे आपको चलते फिरते स्केनर,
और हर साल बदल दी जाती है तारीख ऑन एवरी बैनर
किसी को काम करने को इवन मिला है चिकित्सालय,
ये हैं हमारा अतरंगी कार्यालय ।

ए पी आर अस के नंबर यहाँ चिपके हैं दीवारों पे,
एक दुसरे की बात समझ जाते हैं इशारों में
कोई प्रेमी है ब्रेड का, किसी को है चिकन से प्यार,
पता भी नहीं चलता कब लोग ले कर हो जाते हैं फरार
कोई यहाँ आशिक है कोई दीवाना
कुछ लोगो के लिए जरूरी है ब्रांच ऑफिस में हाज़री लगाना
कोई गायक है, कोई कलाकार
पर कौन टक्कर देगा जो बने हैं यहाँ ठेकेदार
कोई जज्बाती है कोई कूल

कोई ऑन-स्क्रीन के सामने सबको बना रहा है फूल
कोई यहाँ नारद है, कोई मंथरा
चोरी यहाँ सब होता है, दूध, सेब या संतरा
वसूली, मेनू या चाय, यहाँ सिर्फ एक ही है बेन
भाईसाहब संभाल कर रखना यहाँ सबसे पहले गायब होते हैं पेन

कुछ स्पेशल लोग है, जो आज भी है कुवारे
वही सबसे कुश है, न्यारे, प्यारे
यहाँ दोस्ती है, यारी है
एक दुसरे के साथ खड़े है, चाहे कोई भी बीमारी है
यहाँ ईद पर कभी सेवइयां तो कभी बकरे आये है (टिफ़िन में)
दिवाली पर सब मे बट्टी है मिठाई, सब नाचे है गायें है
यही हमारा गिरिजाघर है, यही शिवालय,
ये है हमारा अतरंगी कार्यालय ।



श्री निखिल देवबजाज

लेखाकार

याद आती है के नहीं..?

वो पहली किक जो माँ के पेट में मारी थी
हम वो चीज़ बने जो माँ को सबसे प्यारी थी,
वो पिता जी के चेहरे पर खुशी, आँख में समंदर
उनको लगा था बच्चा, क्या पता था आएगा बवंडर
मम्मी का वो पीछे-पीछे भागकर.. खिलाना पिलाना...
वो खुद का मूल भूत कार्य करने पर 'कर ली कर ली' चिल्लाना
उनका चिढ़ाना, रूलाना... और फिर हँसते भी थे वही
क्यों दोस्त वो दिन याद आते हैं के नहीं ?

वो उनका मेरे पहले शब्दों पर खुशी, वो चलना सिखाना..
बादल कड़कने पर, वो आँचल में मुझे छुपना..
वो बापू के कंधे पर बैठा कर, आसमान से बातें करना
उनका संभालना वो रात की बिन मौसम बारिश या नाक का बेहता झरना
वो खिलोने की दुकान पर मेरे पिता जी का सबसे अमीर होना
और वही टूटे पर मेरी मम्मी का मुझे धोना
वो उनका पहचान करना, क्या गलत है क्या सही
क्यों दोस्त वो दिन याद आते हैं के नहीं ?

वो माँ का स्कूल ले जाना
वो बापू का मेला दिखाना
वो हर जन्मदिन पर मेरे लिए नई ड्रेस है
स्कूल से घर पहुंचें पर भी खाना एक दम फ्रेश
वो बीमार होने पर माँ का सारी रात जागना..
ज़रा का कट लगने पर बापू का डॉक्टर के पास ले कर भागना..
मुफ्त और निःशुल्क सेवा बताओ मिलेगी कहीं
क्यों दोस्त वो दिन याद करते हो के नहीं ?

वो लंगोटिया यारी
मेरा बैट, मेरी बारी
जन्मदिन पर वो विशिष्ट एहसास
2 टॉफी एक्स्ट्रा उसको जो दोस्त खास
वो क्लास में मुर्गा, वो गिरे हुए अंक

वो कैटीन का समोसा, वो दीवार कूद कर बंक
वो आखिरी बेंच, जो आज भी रखा है वही
क्यों दोस्त वो दिन याद आते है के नहीं

और याद आती के नहीं
वो माँ के हाथ का पराठा
वो टीचर का गाल पर चांटा
वो पापा का कंधे पर हाथ
वो यारी बचपन की, बिन स्वार्थ
वो साइकिल पर पूरे गांव की गेड़ियाँ
वो छुटियाँ में घर की बेड़ियाँ
वो पिता जी की घड़ी, वो माँ की चिन्नी और दही
क्यों दोस्त वो बचपन याद आता है के नहीं ?



श्री निखिल देव बजाज
लेखाकार



ऑयल पेस्टल चित्रकारी, सुश्री ईहा मदान पुत्री श्री तिलक राज मदान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



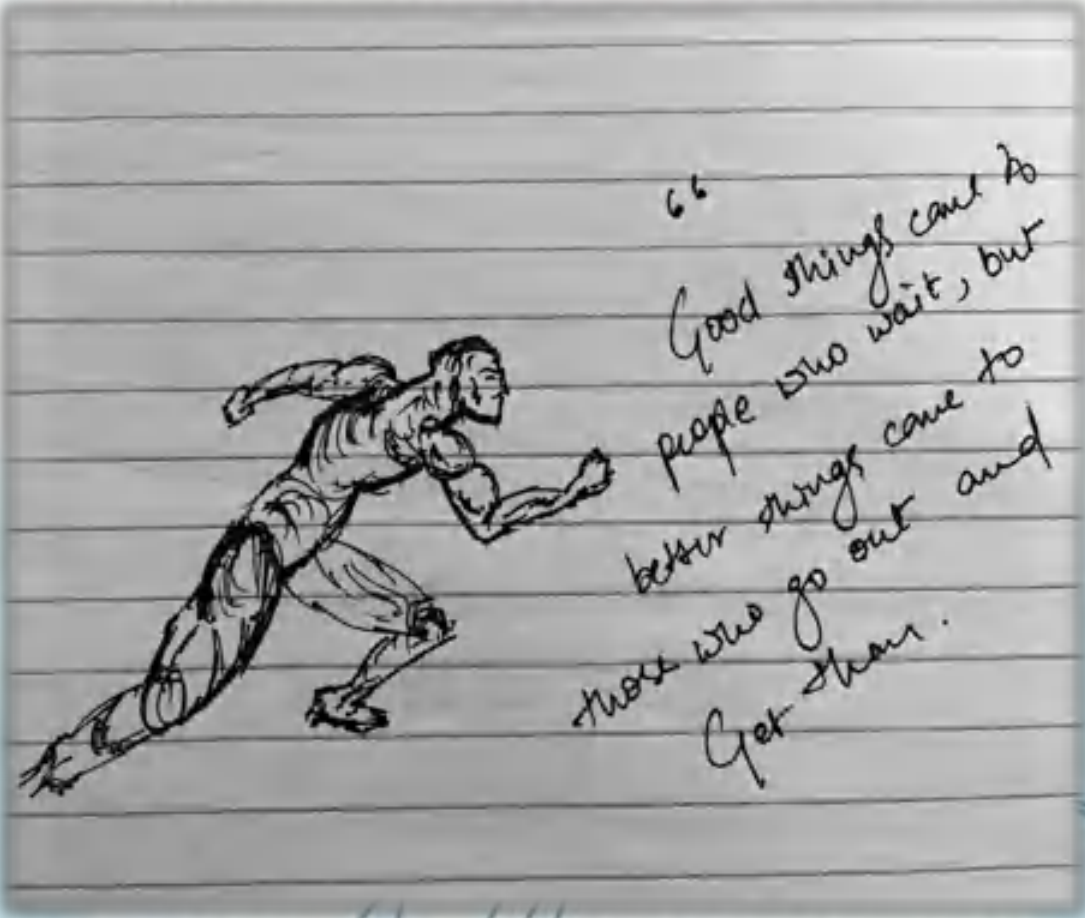
कलर पेंसिल चित्रकारी, सुश्री ईहा मदान पुत्री श्री तिलक राज मदान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



एकिलिक चित्रकारी, सुश्री युवानी मदान पुत्री श्री तिलक राज मदान वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



कलर पेंसिल चित्रकारी, सुश्री ईहा मदान पुत्री श्री तिलक राज मदान, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



श्री विशाल भाटी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



clanvibensal